UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186117
UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Call No. H373 Accession No.
H66- GH 105
Author
हिन्दुस्तानी की सातवीं किताब
Title

This book should be returned on or before the dat
marked below.

सिलसिला कुतुब निसाबी सरिश्ता-ए-तालीमात

न्दुस्तानी की सातवीं किताब

हस्ब तजवीज़ व मंज़ूरी सीरश्ता-ए-तालीमात,
हैदराबाद दक्खन.

प्रथम बार ५००० ता: ३१ मेहर १३५८ फ.

मुद्रकः—

मैनेजिंग डायरेक्टर,

दी मारवाड़ी-प्रेस, लिमिटेड.

२७० अफ़ज़लगंज, हैदराबाद. द.

हिन्दुस्तानी की सातवीं किताब.

क. सं.	विषय	पृ. सं.
१	बच्चे की दुआ (पद्य)	१
२	बीजा नगर का मेला (गद्य)	२
३	कौआ और हिरन का बच्चा (पद्य)	५
४	हवाई जहाज (गद्य)	९
५	हिम्मत न हारो (पद्य)	१२
६	त्याग (गद्य)	१४
७	वर्षा ऋतु (पद्य)	१८
८	कबीर दास (गद्य)	२०
९	किसान का बालक (पद्य)	२४
१०	हैदराबाद (गद्य)	२६
११	संयोगिता (पद्य)	३०
१२	देहाती ज़िन्दगी (गद्य)	३३
१३	सच्ची शराफ़त (पद्य)	४१
१४	राम गोपाल की बहादुरी (गद्य)	४२
१५	त्रिवेणी (पद्य)	४५
१६	डा. रवीन्द्र नाथ ठाकुर (गद्य)	४८
१७	फूल माला (पद्य)	५१
१८	कोह नूर की कहानी (गद्य)	५३

पा. सं.	विषय	पृ. सं.
१९	प्रेम दर्पण (पद्य)	५८
२०	समुद्री तार (गद्य)	६३
२१	सेवा (पद्य)	६८
२२	इम्तिहान (गद्य)	७०
२३	अब्दुलर्रज़्ज़ाक लारी (पद्य)	७७
२४	सीता जी (गद्य)	७८
२५	नील गिरी की सैर (पद्य)	८३
२६	अम्बरी नहर (गद्य)	८६
२७	ग़ज़लें (पद्य)	९१
२८	फ़र्ज़ (गद्य)	७३
२९	ग़ज़लें (पद्य)	९९
३०	पेशों की तालीम (गद्य)	१०१
३१	ग़ज़लें (पद्य)	१०६
३२	सरोजनी नायडू (गद्य)	१०८

—: चित्र सूची :—

१. बच्चों की दुआ

२. हवाई जहाज़

३. नीलगिरी की सैर

४. रवीन्द्रनाथ ठाकुर

५. पेशों की तालीम

६. सरोजनी नायडू

नोट.

हिन्दुस्तानी रीडरों का यह सिलसिला सरिश्ता तालीमात सरकार आली की जानिब से छप रहा है। इन लिताबों की भाषा बहुत आसान, सरल और सलीम है। जो हर जगह समझी, बोली लिखी और पढ़ी जाती है। इनकी तैयारी में हिन्दुस्तानी टेक्स बुक कमेटी ने बड़ा हिस्सा लिया है। मैं इन सब का शुक्रिया अदा करता हूं। मुल्ला सय्यद फ़ख़र उलहसन साहब, डाक्टर शर्मा जी और पंडित वंशीधर जी जिन्होंने उर्दू और देवनागरी लिखावट की किताबों की छपाई का काम संभाला. उनका ख़ास तौर से शुक्रिया अदा किया जाता है। मैं इस कमेटी का सदर बनाया गया था। कमेटी के मेम्बरों के नाम ये हैं:—

१. जनाब डाक्टर आर्येन्द्र शर्मा साहब पी. एच. डी रीडर उस्मानिया यूनिवर्सिटी ... ... रुकुन

२. जनाब नूरुलहसन साहब एम. ए. डप. एड. मोहतमीम तालीमात बल्दा ... ... रुकुन

३. पंडित बंशीधर जी विद्यालङ्कार लेक्चरर शोबा-ए-हिन्दी उस्मानिया यूनिवर्सिटी ... ... रुकुन

४. मुल्ला सैय्यद फ़ख़रुलहसन साहब बी. ए. बी. टी. लेक्चरर उस्मानिया ट्रेनिंग कॉलेज, बल्दा रुकुन

५. राय बल्बीरप्रसाद साहब एम. ए., एम. एस. लेक्चरर ट्रेनिंग कॉलेज उस्मानिया यूनिवर्सिटी ... ...रुकुन

६- राय एकनाथप्रसाद साहब मुन्तज़िम मोतमदी सनअत व हिरफ़त सरकार आली .... रुकुन

७. जनाब मेहदीहसन साहब ज़ुबेरी बी. ए. बी. टी. मद्दगार नाज़िम तालीमात सरकार आली। ... मोतमद

M. F. Rahman

मुन्सरिम नाज़िम तालीमात, सरकार आली.

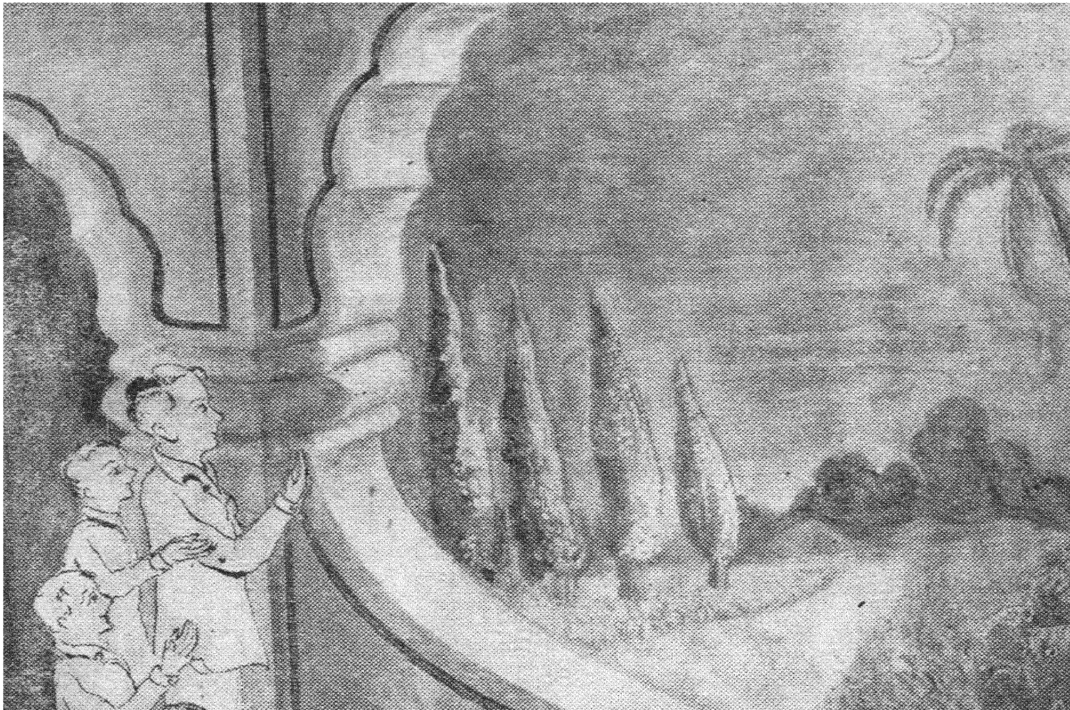

बच्चे की दुआ

हिन्दुस्तानी की सातवीं किताब.

१ बच्चे की दुआ

लब पे आती है दुआ बनके तमन्ना मेरी,
जि़न्दगी शमा की सूरत हो .खुदाया मेरी
दूर दुनिया का मेरे दम से अँधेरा हो जाए,
हर जगह मेरे चमकने से उजाला हो जाए
हो मेरे दम से यों ही मेरे वतन की ज़ीनत,
जिस तरह फूल से होती है चमन की ज़ीनत
इल्म की शमा से हो मुझ को मोहब्बत यारब
जि़न्दगी हो मेरी परवाने की सूरत यारब
हो मेरा काम ग़रीबों की हिमायत करना,
दर्द मंदों से, ग़रीबों से मोहब्बत करना
मेरे अल्लाह बुराई से बचाना मुझ को,
ठीक जो राह हो उस राह चलाना मुझको

———:o:———

सवालात

१. दुआ क्यों करते हैं ?

२. जुमलों में इस्तेमाल करो:- तमन्ना, शमा, हिमायत

३. बच्चे ने क्या दुआ की ?

२ बीजा नगर का मेला

ईरान के सफ़ीर अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बीजा नगर के एक अनोखे मेले का हाल लिखा है जो बहुत धूम धाम से हर वर्ष हुआ करता था। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने इस मेले का नाम राम नवमी बताया है, मगर वास्तव में इस का नाम महा नवमी था। मेले से कुछ दिन पहिले तमाम देश में इसकी चर्चा हो जाती थी। और बड़े धनवान और सरदार बीजा नगर में इकट्ठे होते थे। बहुत से लोग तीन तीन चार चार महीने के रास्ते से आते थे। जिस साल अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने यह मेला देखा उस साल लोग बहुत ज़्यादा शरीक हुए थे और एक हज़ार हाथी भी मेले में लाए गए थे। जिनकी सूँडों और कानों पर भाँति भाँति के चित्र फूल पत्ते बने हुए थे और उनके ऊपर हौदे थे जिन में मदारी और बारूद जलाने वाले बैठे हुए थे। बीजानगर के बड़े बड़े अमीर फ़ौज के सरदार और पंडित ब्राह्मण और ऊँचे ऊँचे हाथी ठीक समय पर एक बड़े मैदान में इकट्ठे हुए। इस मैदान में जगह जगह सुन्दर कौशिकें बनी हुई थीं, जो दो मंज़िल से लेकर पाँच मंज़िल तक ऊँची थीं और उन पर हर प्रकार के ऊपर से नीचे तक बेल बूटे थे, और मनुष्यों पशुओं और पक्षियों से लेकर मच्छर और मक्खियों तक के चित्र थे। जिन के खींचने में बड़ा हुनर दिखाया गया था। उन में से बाज़ कौशिकों के बनाने में ऐसी चतुराई से काम लिया गया था, कि वह हर दम घूमती रहती थीं जिसके कारण हर घड़ी एक नया रूप दिखाई

देता और हर मंज़िल हर कमरा एक नई बहार दिखाता था। मैदान के सामने एक बड़ी ऊँची बारादरी थी जिसकी नौ मंज़िलें थीं जो सुंदर विधि से सजाई गई थीं। नवीं मंज़िल पर राजा का सिंहासन था और अब्दुर्रज़्ज़ाक़ का बयान है कि सातवीं मंज़िल पर उसे जगह मिली थी और वहाँ उसके मित्रों के सिवा किसी को आने की आज्ञा न थी। बारादरी और कौशिकों के बीच में एक खुला मैदान था जहाँ कथा बाँचने वाले अपना अपना हुनर दिखाते थे। अचानक राजा के पीछे के दरवाज़े का पर्दा दोनों तरफ़ से हटा और मदारी अनोखे अनोखे तमाशे करने लगे। उन्होंने तीन शहतीर जो आपस में जुड़े हुए थे खड़े किए उन में से हर शहतीर आधा गज़ चौड़ा और तीन या चार गज़ लंबा था और बीच का शहतीर लंबाई में एक गज़ था। पहले दो शहतीरों पर दो और शहतीर रक्खे जो लंबाई और चौड़ाई में उतने ही बड़े थे और उनकी चोटी पर एक तीसरा शहतीर रक्खा जो किसी क़दर छोटा था। इस प्रकार दो मंज़िले तैयार हो गईं और उसके बाद एक बड़े ऊँचे पूरे हाथी को लाए जो पहली मंज़िल पर क़दम रख कर दूसरी मंज़िल पर चढ़ गया अगर्चे इस शहतीर की चौड़ाई हाथी के पाँव से भी कम थी मगर धीरे धीरे उस ने चारों पाँव उस पर जमा लिए और जब गवइयों ने गाना आरम्भ किया तो हाथी हर गत पर सूँड़ से तान उड़ाने लगा जब यह तमाशा हो चुका तो एक खंभा जो ऊँचाई में दस गज़ था खड़ा किया गया और एक सूराख़ में जो खंभे की चोटी पर था एक शहतीर तराज़ू की डंडी की तरह डाला गया। इस के एक सिरे में

एक बड़ा पत्थर जो वज़न में एक हाथी के बराबर था लटकाया गया और दूसरे सिरे में मोटी मोटी रस्सियों से एक चौड़ा तख़्ता बाँधा गया जो एक गज़ औरस चौरस था। हाथी आसानी से इस तख़्ते पर चढ़ गया और चढ़ते ही रस्सी खोल दी गई। अब यह अजब तमाशा नज़र आने लगा कि एक पलड़े में तो हाथी था और दूसरे पलड़े में पत्थर। कभी यह पलड़ा ऊँचा हो जाता था और कभी वह पलड़ा और कभी ऐसा हो जाता था कि दोनों ज़मीन से कई गज़ ऊँचे हो जाते थे।

वहीं से हाथी कलावंतों के गाने पर सूँड को हिला हिला कर गतें बजाता था तीन दिन तक यह मेला बड़ी धूम धाम से होता रहा तीसरे दिन राजा ने तमाम कथा बाँचने वाले मदारियों और गाने वालों को बढ़िया वस्त्र और अशरफ़ियाँ इनाम में दीं और लौटने से थोड़ी देर पहले अब्दुर्रज़्ज़ाक़ को भी बुलाया। अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जब दर्बार में आया तो उस ने देखा कि दीवान खाने में चार तख़्त बिछे हुए हैं जिन में से हर तख़्त फैलाव में औरस चौरस दस गज़ था। पहले तख़्त के ऊपर राजा का सिंहासन था जो सोने का था और इस में क़ीमती जवाहिरात बड़े हुनर से जड़े गए थे और उस पर बढ़िया रेशम की मसनद बिछी थी जिस में मोतियों की तीन लड़ोंकी झालर थी। कमरे की दीवारों और छतोंपर सोने के पत्तर जड़े हुए थे और उन पर हर प्रकार के जवाहिरात अपनी बहार दिखा रहे थे। यह ऐसा समाँ दिखा कि आँख काम न करती थी और अचंभा होता था कि इतना धन कहाँ से उबल पड़ा।

सवालात

१ माने बताओः—

हौदा, कलावंत, कौशिक, गत।

२. इस सबक़ में जिस मेले का हाल बयान किया गया है वह कहाँ हुआ करता था और किस ज़माने में ?

३. राम नवमी और महा नवमी के त्यौहार क्यों मनाए जाते हैं ?

४. मेले में हाथी क्या क्या तमाशा करते थे ?

३ कौआ और हिरन का बच्चा

रहता था एक दश्त में इक .खूब सा हिरन
नन्हा ही था अभी न हुआ था बड़ा हिरन
फिरता था चौकड़ी का दिखाता मज़ा हिरन
देखा जो एक कौए ने वह .खुशनुमा हिरन
दिल को निहायत उसके वह अच्छा लगा हिरन

कुछ बातें करके कौए ने उसको मिला लिया
और .खुद हिरन भी कौए की बातों में आगया
कौए में अरु हिरन में प्रेम इसक़दर बढ़ा
कौआ जिधर जिधर को .खुश होके उड़ता था
फिरता था उसके साथ लगा जाबजा हिरन

इक गीदड़ आया पास बड़ा था वह नाबकार
बोला हज़ार जान से मैं तुम पे हूँ निसार
मुझको भी अपना जान .गुलाम आजसे ऐयार
पर दिल में था कि कीजे किसी तरह से शिकार
उसके दग़ा फ़रेब से वाक़िफ़ न था हिरन

गीदड़ यह कह फ़रेब से जिस दम गया उधर
कौआ हिरन से कहने लगा करके शोरो शर
यह सख़्त मक्रबाज़ है डर इस से हाँ तू डर
इक दिन दग़ा से तुझको यह पकड़ेगा बे ख़बर
सुन कर यह बात कौए की चुप हो रहा हिरन

एक दिन हिरन के पास वह गीदड़ फिर आ गया
कौए को सोता देख के यों कहने वह लगा
मैं आज देख आया हूँ एक खेत क्या हरा?
तुम खाओ उसको चल के तो बस .ख़ुश हो दिल मेरा
सुनते ही उसके साथ उछलता चला हिरन

जिस खेत पे वह लाया उसे चल के एक चाल
वाँ पहले देख आया था वह इक हिरन का जाल
ले पहुँचा जब हिरन को वहाँ खेत पर शृंगाल
जाते ही बस हिरन ने दिया मुँह को उसमें डाल
मुँह डालते ही जाल में वाँ फँस गया हिरन

वाँ फड़ फड़ाता आ गया कौआ भी नागहाँ
गीदड़ को मार ठोंग हिरन से कहा कि हा
तड़पे मत इस में वर्ना तू होवेगा नातवाँ
कौए की बात सुनते ही आई जो तन में जाँ
जिस जा पे गिर पड़ा था वहाँ से उठा हिरन

गीदड़ लगा जब आने हिरन की तरफ़ झपट
कौआ पुकारा मार दे एक सींग जाए हट
या ज़ोर से तू ऐसी लगा पाँव की लपट
जाए जो इसके लगते ही गीदड़ का पेट फट
सुन कर यह बात सींग हिलाने लगा हिरन

गीदड़ ने ख़ूब कौए को दीं जल के भबकियां
बस दम में कोई आता है सैयाद ए मियाँ
इतने ही में शिकारी हुआ दूर से अयां
कौआ पुकारा लेट जा दम बंद कर के हाँ
दम बंद कर के अपना वहीं गिर पड़ा हिरन

गीदड़ ने झट से देख ली एक जा बचावकी
सैयाद ने हिरन को पड़ा पाके उस घड़ी
अफ़सोस कर के दाम की रस्सी जो खोलदी
कौआ पुकारा भाग अरे वक़्त है यही
सुनते ही वाँ से चौकड़ी भर कर उड़ा हिरन

सैयाद ने जो देखा हिरन उठ चला झपाक
जल्दी से दौड़ पीछे हिरन के वह सीना चाक
सोंटे को फेंकमारा जो फुर्ती से उसने ताक
भागा हिरन लगा वहीं गीदड़ के आखटाक
सिर उसका फूटा और सलामत रहा हिरन

गीदड़ ने उस हिरन का जो चीता था यों बुरा
पाई उसीने अपनी बदी की वहीं सज़ा
था यह तो नस्र मैं ने उसे नज़्म में लिखा
पहुँचा नज़ीर जब वह .खुश होके अपनी जा
कौए के साथ फिर वह बहुत .खुश रहा हिरन

सवालात

१. कौए और हिरन के बच्चे का मुख़्तसर क़िस्सा बयान करो
२. गीदड़ ने क्या चाहा था और क्या नतीजा निकला ?
३. इस सबक़ से तुम को क्या नसीहत हासिल हुई ?
४. इन लफ़्ज़ों को जुमलों में इस्तेमाल करो।

दश्त, दग़ा, भबकियां, चौकड़ी भरना, सैयाद ?

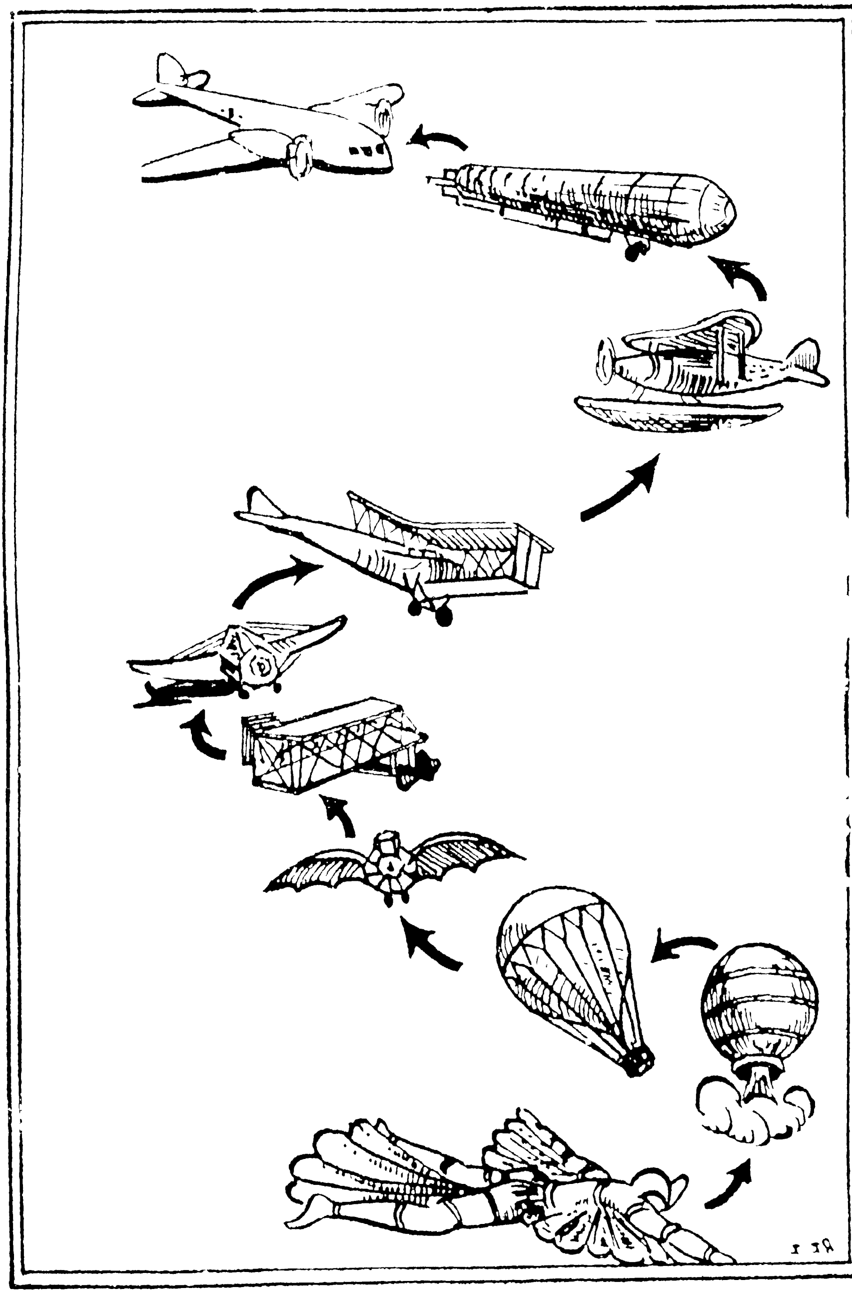

हवाई जहाज़

४ हवाई जहाज़

परिन्दों को उड़ते देख कर इन्सान को भी उड़ने की इच्छा हुई और बहुतों ने लकड़ी के पर लगाकर उड़ने की कोशिश की, लेकिन कामयाब न हो सके। कुछ लोग इस से आगे बढ़े और मज़बूत छाते ले कर छतों पर से कूदे। इस में कुछ कामयाबी हुई और उनका दिल बढ़ा। अठारहवीं सदी में .गुब्बारों का इस्तेमाल होने लगा। जिनमें हाइड्रोजन भरी जाती थी। यह हवा आम हवा से बहुत हलकी होती है। इस लिए .गुब्बारे आसानी से ऊपर उठ सकते थे, परन्तु उनका नीचे उतरना कठिन था और हवा के झोंकों में वह कभी उधर उड़जाते थे कभी इधर यह बात नहीं थी कि जिधर चाहा उधर उन्हें मोड़ दिया और जहां चाहा वहाँ ठहर गए। धीरे धीरे इसकी राहें भी ढूँढ निकाली गईं और ऐसे .गुब्बारे बनाए गए जिन को अपनी इच्छा से जिधर चाहते थे उधर उड़ा सकते थे।

.गुब्बारों में एकदो ही आदमी बैठ सकते थे, परन्तु कुछ ज़माने के बाद जब हवाई जहाज़ बने तो उन में कई आदमी बैठ कर आसमान की सैर करने लगे। हवाई जहाज़ हज़ारों मनका बोझा उठा सकते हैं। और एक घंटे में दो सौ से पाँच सौ मील तक जासकते हैं। इनकी बनावट चील के बदन के जैसी होती है। इसीलिए किसी ज़माने में लोग उन्हें चील गाड़ी कहते थे। फ़र्क सिर्फ इतना

है कि जहाँ चील के बदन में चपटा भाग एक ही होता है वहाँ हवाई जहाज़ में कई चपटे भाग होते हैं जो एक साथ ही हवा के ऊपर दबाव डालते हैं और इसी तरह मशीन ऊपर उठती है। हवाई जहाज़ को आगे पीछे बढ़ाने या हटाने के लिए भी मशीन होती है। उड़ते समय हवाई जहाज़ दूर से किसी बड़े परिन्दे की तरह मालूम होता है। हवाई जहाज़ का ढाँचा लम्बा-सा होता है। जिसके दोनों ओर तख़्ते से लगे रहते हैं। उड़ने के पहले इन तख़्तों को ठीक तरह से लगा कर रखते हैं तब मोटर चलाते हैं। मोटर के चलते ही उसके सामने के पंखे के हाथ जो प्रोपेलर कहलाते हैं बड़ी तेज़ी से घूमने लगते हैं और मशीन तीर की तरह पहियों के ऊपर धरती पर दौड़ने लगती हैं। ज्यों ही पहियों के ऊपर हवा का दबाव पड़ता है, मशीन धरती से उपर उठकर हवा में उड़ने लगती है। पश्चिमी मुल्कों में हर मुल्क आजकल हवाई जहाज़ के बनाने में आगे बढ़ जाने की कोशिश कर रहा है। लाखों करोड़ों रुपए इसमें ख़र्च किए जारहे हैं। पिछली बड़ी जंग में जर्मनी और अमेरिका ने हवाई जहाज़ों के बनाने में बड़ी धूम धाम मचादी थी। आजकल अमेरिका, रूस, इंगलैन्ड, ये तीन देश ही इस बारे में बढ़े हुए हैं।

हवाई जहाज़ से भाँति भाँति के काम लिए जाते हैं। लड़ाई के समय में शहरों पर बम गिरानेका और उन की ताक़त का अंदाज़ा लगानेका इस से अच्छा कोई ज़रिया नहीं। पिछली बड़ी

लड़ाई में हवाई जहाज़ों का काम देख कर कुछ लोगों ने तो पेशीन गोई की है कि अब जो लड़ाइयाँ होंगी वह हवामें लड़ी जाएंगी इन जंगों में उपर से बड़े बड़े बम गिराए जाएँगे। हवाई जहाज़ से फ़ायदा यह है कि रास्ते की कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता। न पुल बाँधना होता है न जंगल काटना पड़ता है और न सुरंग खोदनी होती है। इसलिए मेहनत बहुत कम लगती है और वक़्त की बचत भी बहुत होती है। इस में बैठ कर मुसाफ़िर बहुत कम समय में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच सकते हैं। हवाई जहाज़ के उड़ने में न तो पर्वत ही रुकावट डाल सकते हैं न समुद्र और न जंगल। हवाई जहाज़ इन सब के "उपर उठा हुआ" अपने रास्ते पर चला जाता है और जितनी तेज़ी से हवाई जहाज़ जा सकता है उतनी तेज़ी से न तो तेज़ से तेज़ मोटर ज़मीन पर जासकती है न तेज़ से तेज़ जहाज़ समुद्र में। विलायत की डाक समुद्री जहाज़ से भारत वर्ष को लगभग १५ दिन में पहुँचती है। हवाई जहाज़ से तीन या चार दिन में ही आजाती है।

कोई हैरत की बात नहीं कि आजकल हवाई जहाज़ की उड़ानों का नम्बर दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। हमारे भारत वर्ष में भी कराची, कलकत्ता, बंबई, देहली, हैदराबाद में इनके कई स्टेशन बन गए हैं। देश की तरक़्क़ी में इनका बहुत हाथ रहेगा। क्यों कि जैसा ऊपर कहा जा चुका है लड़ाई के अवसर पर और शान्ति के वक़्त हवाई जहाज़ बड़े मुफ़ीद हो सकते हैं।

सवालात

१. हवाई जहाज़ बनाने का ख़्याल कैसे पैदा हुआ ?

२. हवाई जहाज़ से क्या फ़ायदे हैं ?

३. आजकल लड़ाई में इन से क्या काम लिया जाता है ?

४. आजकल किन किन मुल्कों ने हवाई जहाज़ बनाने में तरक़्क़ी की है ?

५. इनके माने लिखो और जुम्लों में इस्तेमाल करो ।

धूम मचाना, प्रचार, दिन दूना रात चौगुना, बढ़ना, अवसर

६. हवाई जहाज़ पर एक मुख़्तसर मज़मून लिखो ।

५ हिम्मत न हारो

बिगड़ा हुआ है काम तो उसको सँवारना,
डूबा हुआ है नाम तो उसको उभारना ।
पीछे कोई हटे तो न उसको पुकारना;
तुम आप बढ़ के दोस्तों मैदान मारना ॥
हिम्मत न हारना कभी हिम्मत न हारना ।

मुश्किल अगर है काम तो जी तोड़ कर करो,
ऊँची अगर है छत तो कमर बाँधकर चढ़ो ।
रस्ता अगर कठिन है तो सीधे चले चलो;
आसान एक बात है मेरी अगर सुनो ॥
हिम्मत न हारना कभी हिम्मत न हारना ।

झूटों के पास भूल के जाना न तुम कभी,
ए दोस्तो बहाना बनाना न तुम कभी।
हिम्मत के वक़्त मन को छिपाना न तुम कभी;
मेहनत के वक़्त जान चुराना न तुम कभी।
हिम्मत न हारना कभी हिम्मत न हारना।

आए हो तुम यहाँ तो करो जी लगा के काम,
और काम वह कि जिससे हो रोशन तुम्हारा नाम।
और नाम वह कि लें उसे इज़्ज़त से ख़ास व आम,
मुमकिन है सब सुनो तो सही मेहर का कलाम॥
हिम्मत न हारना कभी हिम्मत न हारना।

सवालात

१. हिम्मत क्यों कर क़ायम होती है और इसके क्या फ़ायदे हैं ?

२. इन लफ़्ज़ों और मुहावरों के माने लिखोः—
मैदान मारना, जी तोड़ कर, जी लगाना, जान चुराना।

३. हिम्मत के बग़ैर मुश्किल काम क्यों अंजाम नहीं पाते ?

४. अगर तुम ने हिम्मत से कोई मुश्किल काम किया है तो उसको बयान करो ?

५. हिम्मत पर एक मुख़्तसर मज़मून लिखो ?

६ त्याग

बेटा– "एक मर्तबा ईद को एक बड़ी भारी टोपी मुझ को अम्माँ जान ने बनादी थी। वही टोपी ओढ़े हुए मैं ख़ाला जान के यहाँ जाता था। मियाँ मिस्कीन के कूचे में पहुँचा तो बहुत से चपरासी प्यादे एक घर को घेरे हुए थे, और बहुत से तमाशाई भी वहाँ मौजूद थे। यह देख कर मैं भी लोगों में जा घुसा तो मालूम हुआ कि एक बहुत ग़रीब बूढ़ी-सी औरत है। छोटे छोटे कई बच्चे हैं। सरकारी प्यादे उसके मियाँ को पकड़े लिए जाते हैं इसलिए कि उस ने किसी के यहाँ से उधार खाया था और उस आदमी ने उस पर डिग्री कराई थी। वह मानता था कि क़र्ज़ा देना है मगर कहता था कि मैं क्या करूँ इस वक़्त ख़ाली हाथ हूँ। उस बेचारे ने उस आदमी की और सरकारी प्यादों की ख़ुशामद की मगर न वह आदमी मानता था, न प्यादे, और पकड़े लिए जाते थे। आख़िरकार वह औरत अपने मियाँ से बोली "बला से जो चीज़ घर में है उसको देकर अपना पिन्ड छुड़ाओ। तुम रह जाओ तो फिर जैसी होगी देखी जायेगी" तवा, चक्की पानी पीने का कटोरा नहीं मालूम किन वक़्तों की हल्की हल्की दो पतीलियाँ बस यही उस घर की कुल जत्था थी। चाँदी की दो दो चूड़ियाँ लेकिन ऐसी पतली जैसे तार उस औरत के हाथों में थीं। यह सब सामान उसने बाहर लाकर रख दिया। पहले वह आदमी जिसने सामान उधार दिया था उन चीज़ों को हाथ नहीं लगाता

था। लोगों ने बहुत कुछ कहा सुना यहाँ तक कि उन सरकारी प्यादों को भी रहम आया उन्होंने भी उस आदमी को समझाया। बड़ी कोशिशों के बाद वह इस बात पर राज़ी हुआ कि पाँच रुपये असल और दो रुपये सूद सातों के सातों दे दें तो पीछा छोड़ दूँ। लेकिन इस ग़रीब का तमाम सामान चार साढ़े चार से ज़्यादा का न था तब फिर घर में गया और बीबी से कहा कि ढाई रुपये की कसर रह गई है तो बीबी ने कहा कि अब तो कोई चीज़ भी मेरे पास नहीं। हाँ लड़की के कानों में चाँदी की बालियाँ हैं देखो जो उन को मिला कर पूरी पड़े। वह लड़की कोई छ: बरस की थी। माँ जो उसकी बालियाँ उतारने लगी तो वह लड़की इस दु:ख के साथ रोई कि मुझ से रहा न गया और मैंने दिल में कहा कि इस वक़्त मुझ से कुछ भी इस की मदद नहीं हो सकती। साथ ही ख़याल आया कि एक रुपया और कोई दो आने के पैसे तो मेरे पास हैं। देखूँ टोपी बिक जाय तो इसका सारा क़र्ज़ा चुक जाय। बाज़ार तो पास था ही लपक कर मैं गली के बाहर निकल आया। अँगोछा तो सिर से लपेट लिया और टोपी हाथ में ले कर एक गोटे वाले को दिखाई उसने छः की आँकी। मैं ने भी छूटते ही कहा ला बला से छ: ही दे। छः वह और एक रुपया मेरे पास था ही। सातों रुपए ले मैंने चुपके से उस औरत के हाथ पर रख दिए। तब तक प्यादे उसके मियां को पकड़ के लेजा चुके थे और घर में रोना पीटना मच रहा था। एकाएक सात रुपये हाथ में देख उस औरत को बहुत ख़ुशी

हुई और उस .खुशी में उसने कुछ नहीं सोचा कि यह रुपया कैसा है और किसने दिया है ? तुरंत अपने पड़ोसी को रुपए देकर दौड़ाया और .खुद बच्चों समेत दर्वाज़े में आ खड़ी हुई । बात की बात में वह छूट आया तो बच्चों को कैसी .ख़ुशी हुई कि कूदें और उछलें कभी बाप के कंधे पर और कभी माँ की गोद में और कभी एक पर एक । अब उस औरत को मेरा ख़्याल आया और बच्चों से बोली "कमबख़्तो ! क्या ऊधम मचाते हो (मेरी तरफ़ इशारा करके कहा) दुआ दो इन की जान व माल को जिन्होंने आज बाप की और तुम सब की जानें रख लीं । हमारे लिए तो यह लड़का क्या है रहमत का फ़रिश्ता है" । वह बच्चे जिस प्यार की नज़र से मुझ को देखते थे उसकी .ख़ुशी अब तक मैं अपने दिल में पाता हूँ । मैं तो खिसकने को था, परन्तु औरत ने एक न सुनी और मुझ को अपने घर में ले गई । टूटी-सी एक चौकी पड़ी थी मैं बहुत कुछ रोकता रहा । जल्दी से उसको अपने दुपट्टे से झाड़ मुझ को बैठने का इशारा किया और बोली" बेटा ! तुम यह तो बताओ कि तुम कौन हो ?"

मैं – "मेरी ख़ाला मियाँ साहब की सराय में रहती है" ।

औरत – "फिर बेटा यह अपना रुपया तुम हमसे कब लोगे ? हम अपना और अपने बच्चों का पेट काटेंगे और तुम्हारा क़र्ज़ा सब से पहले चुकाएँगे मगर काम इन दिनों मंदा है जहाँ तुम ने मेहरबानी की है इतनी दया और करो कि दो रुपए महीना ले लिया करो"

मैं—" आप रुपए का कुछ फ़िक्र न कीजिए मैंने लेनेके ख़्याल से नहीं दिया"। यह सुनकर तमाम कुन्बे का कुन्बा इतना .खुश हुआ कि मैं बयान नहीं कर सकता। उस औरत के मुँह से मारे .खुशी के बात नहीं निकलती थी बार बार मेरी बलाएँ लेती थी और मेरे हाथों को चूमती और आँखों से लगाती थी। उस की बलाओं में मेरा अँगोछा सिर पर से खिसक गया तो उस ने देखा कि मेरे सिर पर टोपी नहीं। पूछा तो मुझ को कहना पड़ा कि वही टोपी बेचकर मैंने रुपए दिये फिर तो उसका यह हाल था कि बिछी जाती थी। सात रुपए की भी कुछ मालियत थी, मगर उस ने मुझ को सैकड़ों हज़ारो ही दुआएँ दी होंगी। रुपए ख़र्च करने के बाद मुझ को उम्र भर ऐसी .खुशी नहीं हुई, जैसी कि उस दिन हुई थी।

सवालात

१. सरकारी प्यादे क़र्ज़दार को क्यों पकड़ कर ले जा रहे थे ?

२. माने बताओ और जुम्लों में इस्तेमाल करो ?

पूरी पडना, पिन्ड छुड़ाना, आँकना, और ऊधम मचाना, काम मंदा होना।

३. अपना नुक़सान करके दूसरों का फ़ायदा चाहने में क्या .खूबी है?

४, अगर तुम ने कभी अपना नुक़सान करके दूसरों के फ़ायदेका कोई काम किया है तो उसको मुख़्तसर तौर पर बयान करो ?

५. त्याग (ईसार) की .खूबी पर एक मज़मून लिखो।

७ वर्षा ऋतु

गर्मी की तपिश बुझाने वाली सर्दी की ख़बर सुनाने वाली
वह सारे बरस की जान बरसात वह कौन .खुदा की शान बरसात
आई है बहुत दुआओं के बाद और सैकड़ों इल्तजाओं के बाद
बरसात का बज रहा है डंका इक शोर है आसमाँ पे बरपा
है अब्र की फ़ौज आगे आगे और पीछे हैं दल के दल हवा के
हैं रंग बिरंग के रिसाले गोरे हैं कहीं कहीं हैं काले
आकाश पे छावनी है छाती एक आती है फ़ौज एक जाती
जाते हैं मुहिम पे कोई जाने हमराह हैं लाखों तोप ख़ाने
तोपों की है जब कि बाढ़ चलती छाती है ज़मीन की दहलती
बिजली है कभी जो कूद जाती आँखों में है रोशनी सी आती
घन घोर घटायें छा रही हैं जन्नत की हवाएँ आरही हैं
कोसों है जिधर निगाह जाती कुदरत है नज़र .खुदा की आती
सूरज ने नक़ाब ली है मुँहपर और धूप ने तह किया है बिस्तर
पानी से भरे हुए हैं जल थल है गूँज रहा तमाम जंगल
करते हैं पपीहे पीहू पीहू और मोर चिंघाड़ते हैं हरसू
कोयल की है कूक जी लुभाती गोया कि है दिल में बैठ जाती
मेंडक जो हैं बोलने पे आते संसार को सर पे हैं उठाते
अब्र आया है घिरके आसमाँ पर बातें हैं .खुशी की हर ज़बाँ पर
मंदिर में है हर कोई यह कहता कृपा हुई तेरी मेघ राजा
रक्षक हैं जो बड़े जैन मत के ढकने हैं दियों पे ढकते फिरते

करते हैं यों जीवों की रक्षा ता जल न बुझे कोई पतिंगा
खम बाग़ों में जा बजा गढ़े हैं झूले हैं कि चार स पड़े हैं
कुछ लड़कियां बालियाँ हैं कमसिन जिन के हैं खेल कूद के दिन
जब गीत हैं सारी मिलके गातीं जंगल को हैं सर पे वह उठातीं
हैं फूल रहीं .खुशी से सारी और झूल रही हैं बारी बारी
इक सब को खड़ी झुला रही है इक गिरने से .खौफ़ खा रही है
है इन में कोई मल्हार गाती और दूसरी पैंग है बढ़ाती
इक झूले से वह गिरी है जाकर सब हँसती हैं क़हक़हे लगाकर
नदी नाले चढ़े हुए हैं तैराकों के दिल बढ़े हुए हैं
बगलों की हैं डारें आके गिरती मुरग़ाबियां तैरती हैं फिरती
चकले हैं ये पाट नदियों के दिन भर में हैं बेड़े जाके लगते
ज़ोरों पे चढ़ा हुआ है पानी मौजों की हैं सूरतें डरानी
नावें हैं कि डग मगा रही हैं मौजों के थपेड़े खारही हैं

मँझधार की रौ यह .जोर पर है
मछली को भी जान का ख़तर है

सवालात

१. घनघोर, पैंग बढ़ाना, बगुला, जीव और जल बुझना के माने बताओ?

२. बाढ़ चलना, छाती दहलना, बिस्तर तह करना, को अपने जुम्लों में इस्तेमाल करो।

३. नीचे लिखे का मतलब बताओ।

रक्षक जो बड़े हैं जैन मतके, ढकने हैं दियों पे ढकते फिरते।
मेंढक जो हैं बोलने पे आते, संसार को सर पे हैं उठाते।
मँझधार की रौ यह ज़ोर पर है, मछली को भी जान का ख़तर है?

४. जैन मत के बारे में तुम क्या जानते हो?

८ कबीर दास

हिन्दुस्तान के बड़े बड़े आदमियों में कबीरदास का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उनके भजनों को साधु लोग बड़े प्रेम से गाते हैं और उनकी बनाई साखियाँ आम लोग कहावतों की तरह बरतते हैं। महात्मा कबीर ने एक पंथ भी चलाया था जिसे कबीर पंथ कहते हैं और उसके मानने वालों को कबीर पंथी। इसके मानने वालों में साधु भी होते हैं और गृहस्थ भी। कबीर पंथी साधु अपने सिर पर नोकदार पीले रंग की टोपी पहनते हैं।

कबीर साहब कौन थे? कहाँ और किस समय उन्होंने जन्म लिया? उनका असली नाम क्या था? बचपन में उन्होंने कहाँ शिक्षा पाई? वह किस धर्म को मानते थे? उनके माता पिता कौन थे? और उनका विवाह हुआ था या नहीं? वह कितने समय तक ज़िन्दा

रहे ? इन बातों को बहुत कम लोग जानते हैं। कबीर साहब का हाल लिखने वाले अलग अलग बातें बतलाते हैं। उन बातों में सच कितना है इसका पता लगाना सहज नहीं हैं। कबीर कसौटी में कबीर साहब का जन्म संवत् १४५५ विक्रम् में और इन्तकाल १५७५ में होना लिखा है। कबीर पंथी लोग उनकी उम्र इस से बहुत ज़्यादा बतलाते हैं। इन दोनों में से किस की बात सच है इसका ठीक ठीक फैसला करना बड़ी खोज का काम है। कबीर पंथ के विद्वानों की राय में कबीर साहब का जन्म संवत १४५५ ही सही है।

उनके जुलाहा होने में कोई संदेह नहीं। परन्तु वह जन्म से जुलाहे नहीं थे। यह कहावतों से मालूम होता है। कहा जाता है कि एक जुलाहा जिसका नाम नीरू था अपनी स्त्री नीमाके साथ काशी के लहर तालाब के किनारे किनारे आरहा था। उसने एक बालक को वहाँ पड़ा पाया तो उसे घर लाकर पाल लिया। यही बच्चा बड़ा होने पर महात्मा कबीर के नाम से मशहूर हुआ। कबीरदास जी बचपन से ही बड़े धर्मात्मा थे। जब उनको कुछ समझ आई तब वह "राम, राम" का जप करने लगे। एक जुलाहे के घर रामनाम जपना असंभव सा जान पड़ता है। परन्तु संगत का असर बड़ा अजीब है। वह असंभव को भी संभव कर देता है। लोग कहते हैं कि कबीर स्वामी रामानन्द जी के चेले थे।

स्वामी रामानन्द रोज़ तड़के गंगा स्नान के लिए घाट पर जाया करते थे। एक दिन उसी समय कबीर घाट की सीढ़ियों पर जाकर सोरहे। अँधेरे में स्वामी जी का पैर उन पर पड़ गया वह कुलबुलाए स्वामी जी ने कहा "राम राम"। कबीरदास ने उसी को गुरू मंत्र मान लिया। उसी दिन से उन्होंने अपने आपको काशी में स्वामी रामानन्द का चेला ज़ाहिर किया।

कबीरदास अपनी गुज़र बसर अपने धंधे के ज़रिये ही करते थे इस बात को उन्होंने अपने रचे हुए गीतों में साफ़ साफ़ ज़ाहिर कर दिया है! कुछ विद्वान कहते हैं कि उनकी स्त्री का नाम लोई था। इसी प्रकार कमाल उनका पुत्र, कमाली उनकी पुत्री थी।

कबीरदास जी बड़े ही सदाचारी थे। वह पढ़े लिखे न थे परन्तु उन्होंने साधु संत और महात्माओं का सत्संग ख़ूब किया था और उसी से बहुत सी बातें जान ली थीं। वह सचाई के बड़े तरफ़दार थे। इसीलिए उनके विरोधी भी कई थे। परन्तु उनके हृदय में जो सत्य का दीपक जल रहा था वह किसी के बुझाए न बुझा। कबीरदास ने खुद कोई ग्रंथ नहीं लिखा। वह साखी और भजन बना कर कहा करते थे और उनके चेले उन्हें याद कर लेते थे। पीछे से वह सब इकट्ठ कर लिए गए।

लोगों का यह कथन है कि मगहर नामी स्थान में जो बनारस के पास गंगा तट पर है प्राण त्याग करने से मुक्ति नहीं मिलती।

लोगों का अंधा विश्वास मिटाने के लिए ही मगहर में जाकर उन्होंने शरीर छोड़ा। कबीर साहब की कविता में बड़ी शिक्षा भरी है! उन्होंने जो पद कहे सभी एक से एक बढ़कर हैं। उनकी बातें तो छोटी हैं परन्तु उन में बड़ा ज्ञान भरा हुआ है।

सवालात

१. कबीर साहब का जन्म कब हुआ ?

२. कबीर साहब ने कौनसा पंथ चलाया। उस पंथ के मानने वाले क्या करते हैं ?

३. कबीर साहब जुलाहे किस तरह बन गए ?

४. कबीर साहब रामानन्द के चेले किस तरह बने ?

५. कबीर साहब की शायरी के बारे में तुम क्या जानते हो ?

६. जुम्लों में इस्तेमाल करो:—

कथन, मुक्ति, दीपक, सदाचारी, पद, असंभव।

१ किसान का बालक

जब कुछ होश सँभाला, मैंने अपने को वन में पाया;
हरी भूमि पर कहीं धूप थी, और कहीं गहरी छाया।
एक भैंस दो गायें लेकर, दिन भर इन्हें चराता था;
घर आ कर अपनी मां से फिर, थोड़ी रोटी पाता था॥

सुख भी नहीं छिपाऊंगा मैं, पाया है मैंने जितना;
कभी कभी घी भी मिल जाता, पर वह होता है कितना।
माता पिता छाछ पीकर ही, अपना पेट भरा करते,
भैंस और गायों की रहन्टी, घी दे दे कर भरते थे॥

देख किसी का ठाट न हमको, हरगिज़ जलन सताती थी;
और न अपनी गिरी दशा पर, लज्जा ही कुछ आती थी।
मानो वही उन्हें है थोड़ा, और हमें है बहुत यही;
जो कुछ जो लिखवा लावेगा, पावेगा वह सदा वही॥

सदा पसीना मेरे तन का, ठंडी हवा सुखाती थी;
घनी घनी छाया पेड़ों की, गोदी में बिठलाती थी।
मुझ से ही मेरे साथी थे, सब मिल कर खेला करते;
हरी घास पर कभी लेटते, कभी दण्ड पेला करते॥

मन निर्मल था तन पर जो कुछ, आ पड़ता झेला करते;
गूँज उठा करता था जंगल, जबकि हर्ष सिला करते।

कभी दौड़ने लग जाते हम, रह जाते फिर मुग्ध खड़े;
उड़ने की इच्छा होती थी, उड़ते देख परिन्द बड़े ॥

बंदर-से पेड़ों पर चढ़ कर, डालें कभी हिलाते थे;
पके पके फल तोड़ परस्पर, खाते और खिलाते थे।
हाँक मार मार शेरों को, चलते समय बुलाते थे;
कान उठा कर घर चलने को वह, भी दौड़े आते थे ॥

कभी दौड़ते मैदानों में, कभी पहाड़ों पर चढ़ते,
कभी तैरते हुए होड़ से पानी में आगे बढ़ते।
रस बरसाती हुई घटा भी, नीचे उतरती आती थी :
मानो गोदी में ले अपनी, .कुदरत हमें खिलाती थी ॥

सवालात

१. किसान का बालक दिन भर क्या करता था ?

२. किसान के बालक की ज़िन्दगी पर दस सतरें लिखो।

३. किसान के बालक को खाने को क्या मिलता था ?

४. माने लिखो और जुमलों में इस्तेमाल करो।

मुग्ध, हर्ष हेला, निर्मल, होड़

५. किसान के बालक ने जो कुछ कहा तुम उसको क्या समझते हो ?

इनके ज़माने में धीरे धीरे शहर की .ख़ूबसूरती बढ़ाने की कोशिशें की गईं, और जैसे जैसे दिन गुज़रते गए इल्म और फ़न बढ़ते गए यहाँ तक कि जब नव्वाब मीर महबूब अली ख़ाँ मरहूम का ज़माना आया तो इस की शान निराली हो गई।

हैदराबाद का नया दौर नव्वाब मीर उस्मान अली ख़ाँ बहादुर के तख़्त पर बैठने से शुरू होता है। इन्होंने मुल्क और क़ौम की भलाई के काम किए और अपनी बुद्धि और उपज से मुल्क को आबाद, पुर बहार और रौनक़दार बना दिया और इल्म की रौशनी देश के कोने कोने में फैल गई।

हैदराबाद इस वक़्त जिस रूप में नज़र आरहा है इससे पहले इसको यह बात कभी नसीब न थी। आबादी नौ लाख के क़रीब है, अबसे पहले कभी इतनी बड़ी आबादी न थी। शहर का फैलाव बहुत बढ़ गया। इसके अतराफ़ मीलों ऊँची इमारतें खड़ी होगई हैं। पुराना शहर, नए का एक मुहल्ला मालूम होता है। शहर की सफ़ाई के लिए एक महकमा है और आराइश के लिए एक महकमा क़ायम किया गया है, जिनके ज़रिये शहर में रोज़बरोज़ सफ़ाई .ख़ुशनुमाई और .ख़ूबसूरती पैदा की जा रही है। आराइश के महकमें की तरफ़ से उन लोगों के लिए जो नए घर बनाकर रह नहीं सकते आराम के लिए नये और सुन्दर मकान बनाए जारहे हैं। और शहर के बड़े रास्तों को पक्का और चौडा बनाया जारहा है। शहर की नई

इमारतों में जुबली हाल, अदालतुल आलिया, दवाख़ाना उस्मानिया और सिटी कालेज देखने के क़ाबिल हैं।

शहर के अतराफ़ में बड़े बड़े सागर हैं, पुराने सागरों में हुसेनसागर, मीर आलम और मीर जुमला के तालाब हैं। और नयों में उस्मान सागर और हिमायत सागर के बहुत लम्बे चौड़े और गहरे सागर हैं। इनके दृश्य बड़े मनोहर हैं, आख़िरी तालाबों से आबरसानी और आबपाशी के काम लिए जाते हैं। इनसे शहर में पानी ख़ूब मिलता है। और घर घर पानी के नल हैं। शहर में लोगों की सैर के लिए बाग़ भी हैं। बाग़ेआम बहुत बड़ा और सुन्दर बाग़ है। इसमें टाउन हाल, मस्जिद, नुमाइशघर और जुबली हाल भी हैं।

केवल यही चीज़ें हैदराबाद के लिए कुछ ख़ास नहीं हैं। इसकी बड़ाई का सबसे बड़ा कारण यह है कि सरकार ने बड़ी-दरिया दिली से तालीमात के लिए अपने ख़ज़ाने का मुँह खोल दिया है। मुल्क के कोने कोने में विद्वान मनुष्य फैले हुए हैं। ख़ास तौर पर जामये उस्मानिया के कारण यहाँ एक नया इल्मी जीवन पैदा हो गया है।

सवालात

१. हैदराबाद को बसाने वाला कौन था और पहले इसका नाम क्या था?

२. .कुतुब शाही ज़माने की चन्द इमारतों के नाम बताकर इन का कुछ हाल भी लिखो।

३. इनके माने लिखो और जुमलों मे बर्तो।

उपज, चहलपहल, आश्रम, संख्या।

४. हैदराबाद में क्या क्या इस्लाहें हुईं उनको मु.ख्तसर तौर पर बयान करो।

५. हैदराबाद की तालीमी तरक़्क़ी पर मु.ख्तसर नोट लिखो।

११ संयोगिता

संयोगिता हसीं थी खुशरू थी नेक थी।
रावी का यह बयाँ है हज़ारों में एक थी॥
कम ऐसे हुस्न वाले हुए हैं जहान में।
शोहरत थी उसके हुस्न की हिन्दूस्तान में॥
राजा ने जब यह देखा कि शादी का सिन हुआ।
उसने मुक़र्रर एक स्वयम्बर का दिन किया॥
गुल .खुशनुमा हर एक चमन से लिए गए।
राजा तमाम हिन्द के मदऊ किये गए॥
हाँ एक पृथ्वीराज को दावत न दी गई।
जैचन्द और इसमें बहुत थी चली हुई॥

हालाँ कि हिन्द में कोइ ऐसा जवां न था।
हिम्मत में बढ़ के उससे कोई बे गुमाँ न था॥
जैचन्द को न सब्र इसी बात पर हुआ।
पृथ्वी का बुत भी दर पे बना कर खड़ा किया॥
मतलब यह था नज़र में करें सबकी कम उसे।
दरबां की तरह गोया समझते हैं हम उसे॥
संयोगिता को इसका बहुत ही मलाल था।
लेकिन पिता के हुक्म का टलना मुहाल था॥
आख़िर को राजा आए स्वयंवर के दिन तमाम।
क़न्नौज में था हिन्द के राजों का इज़्दहाम॥
आए थे ऐसे एसे हसीं ख़ूबरू जवाँ।
देखे कोई तो उनको फ़रिश्तों का हो गुमां॥
मशहूर राजपूत हैं हिन्दुस्तान में।
सानी कहां है इनका शुजाअत में शान में॥
जय माला हाथ में लिए संयोगिता चली।
इठलाती गोया बाग़में ठन्डी हवा चली॥
आगे बढ़ी वह एक नज़र सबको देख कर।
देखा फिर एक बार ठहर कर इधर उधर॥
संयोगिता के दिल में बसी थी किसी की बू।
आँखें किसी को ढूंढ रही थीं चहार सू॥
आख़िर वह मूर्ती कि तरफ़ ही गई बढ़ी।
फुलमाल पृथ्वीराज की गर्दन में डाल दी॥

—: नोट :—

संयोगिता जयचन्द कन्नोज के राजा की लड़की का नाम था। पृथ्वीराज शाहे देहली से जयचन्द के ताल्लुकात अच्छे न थे। इसलिए संयोगिना के स्वयम्बर में इसे दावत न दी गई और इसका एक बुत बनाकर दरवाज़े पर लगाया गया, लेकिन संयोगिता पृथ्वीराज से शादी करना चाहती थी इसलिए इसने पृथ्वीराज की मूर्ति के गलेमें जयमाला डाली चुनाँ चे उससे शादी हुई॥

सवालात

१. संयोगिता कौन थी? उसका कुछ हाल बयान करो?

२. स्वयम्वर किसे कहते हैं?

३. संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज को बुलावा क्यों नहीं दिया गया?

४. पृथ्वीराज की मूर्ति बनाकर दरवाज़े पर क्यों रक्खी गई!

५. इस नज़्म में जो कुछ कहा गया उसे अपने लफ़्ज़ों में लिखो?

६. "आँखें किसी को ढूँढ रही थीं चहार सू" इसमें शायर का इशारा किस तरफ़ है बताओ?

७. इन लफ़्ज़ों को अपने जुम्लों में इस्तेमाल करो?

मलाल, इज़्दहाम, सानी, शुजाअत, इठलाकर चलना,

८. मतलब बताओ ?

आये थे ऐसे ऐसे हसीं .खूबरू जवाँ ।

देखे कोई तो उनको फ़रिश्तों का हो गुमाँ ॥

१२ देहाती ज़िन्दगी

हुसेन के घर के सामने की फुलवारी, दाहने बाएँ पौधों की क़तारें, पीछे मकान के सामने का हिस्सा, बीच में एक मेज़ है जिसके एक तरफ़ हुसेन और दूसरी तरफ़ भक्तराम बैठे चाय पी रहे हैं ।

हुसेन— कहिए चाय बहुत बे मज़ा तो नहीं है । मैं तो, आप जानते हैं कभी पीता नहीं, आपके आनेकी ख़बर सुनी तो जल्दी से मँगवा भेजी । मालूम नहीं नौकर ने कैसी बनाई । सच पूछिए तो मुझे चाय के बारे में कुछ भी तमीज़ नहीं ।

भक्तराम:— (मुस्करा कर) ख़ैर आपने चाय छोड़दी, यह अच्छा किया । इससे मेदा बहुत ख़राब होजाता है, परन्तु मैं आपके इस एकान्त वास का क़ायल नहीं ।

हुसेन:— एकान्त वास बहुत बड़ा लफ़्ज़ है । मुझ जैसों के लिए इसको इस्तेमाल करके आप इसकी क़ीमत घटा रहे हैं । मैं निहायत लालची दुनियादार हूँ, पैसे के लिए दौड़ धूप करता हूँ । कहाँ एकान्त वास ।

भक्तराम:— पैसा तो फिर भी बड़ी चीज़ है। रुपये की चाह करने वाले तो कौड़ियों के पीछे भी जान देने को तैयार होजाते हैं। मेरा मतलब कुछ और ही था। मैं यह कहना चाहता था कि आपका हम लोगों से सभ्य और शिक्षित मनुष्यों की संगत से शहरी जीवन की दिल चस्पियों से अलग थलग रहना ठीक नहीं। आप किफ़ायत शआर सदासे थे। यह तो मुझे .खूब मालूम है। लेकिन बे मज़ा जीवन बिताना भला कब किफ़ायत है। शहर में ख़र्च बहुत होता है यह मैंने माना, मगर आप तो ईश्वर की कृपा से धनी हैं आपको काहे की चिन्ता है विधि से ख़र्च कीजिये। चैन से रहिये, जायदाद के प्रबन्ध के लिए कोई आदमी रख लीजिए। कुछ ऐसा कठिन काम तो है नहीं और न इस में आपकी-सी योग्यता के मनुष्य की आवश्यकता है।

हुसेन:— जी! मैं अपनी योग्यता को अच्छी तरह जानता हूँ, नहीं तो यहाँ अकेले रहने को क्यों पसन्द करता। मेरा धीरे धीरे यह ख़्याल पक्का हो गया है कि बुद्धिमान होकर शहर में रहने से मूर्ख होकर गाँव में रहना ज़्यादा अच्छा है। यहाँ सोसाइटी नहीं, दिलचस्पियाँ नहीं, मगर भूख .खूब लगती है नींद-भी मज़ेकी आती है और मुझ जैसों को इस से ज्यादा और चाहिये क्या?

भक्तराम:— नहीं भाई हम पर तो आपकी इन बातों का असर होता नहीं। हम आपका इस तरह गाँव में बैठकर आयु नष्ट करना पसन्द नहीं कर सकते। देश को आप जैसे विद्वान् और रौशन ख़्याल जवानों की बहुत आवश्यकता है। यह तो आप भी जानते हैं। इस अवस्था में यहाँ पड़े रहना अपने कर्त्तव्य से भागना है। जब नाविक ही मुँह छिपाकर बैठ रहें तो क़ौम की नाव क्या ख़ाक पार हो सकती है।

हुसेन:— अजी कैसी नाव और कहाँ का कर्त्तव्य, दो वर्ष तक शहर की ख़ाक छानता रहा, किसी ने पूछा तक नहीं। अब ज़रा दिलको समझा बुझा कर यहाँ रहने पर राज़ी किया है, तो आप पहुँचे मुझे मेरा कर्त्तव्य बतलाने। मैं तो अब यहाँ से खिसकता नहीं।

भक्तराम:— ख़ैर आप खिसकना न चाहें तो कोई आपको खिसका भी नहीं सकता। मगर आपकी शिकायत मेरी समझमें न आई। अब्दुल ग़फ़ूर साहब हमारे नेता आपके सगे होते हैं और जहाँ तक मैं विचार करता हूँ वह आपकी सरपरस्ती करने में कभी नहीं हिचकिचाएँगे। वह तो बहुत ख़ुश होंगे। अगर आज कल के जैसे कठिन समय में आप उनकी सहायता को पहुँचें। दिलदार हुसेन साहब हमारे शहर के बड़े नेता भी हमेशा से आप पर

विश्वास रखते हैं। डाक्टर विजय कुमार जब देखिए इसका दुखड़ा रोते हैं कि मेरा हिसामुद्दीन जब से गाँव में जाकर बैठ रहा तब से हमारी मंडलियाँ सूनी पड़ गई हैं। बात चीत बे मज़ा होगई है। आख़िर यह सब लोग आपके बड़े ही तो हैं, इनका दिल तो न दुखाइये।

हुसेन.—जनाब मैंने पहले ही हाथ जोड़ कर कहा कि दो वर्ष शहर की ख़ाक छान चुका हूँ, आप शायद मेरा मतलब नहीं समझे। यही नेता और सरपरस्त और क़द्रदाँ थे जिनके कारण मेरी आयु नष्ट हुई। दूध का जला हूँ अब तो छाँछ भी फूँक फूँक कर पिऊँगा।

भक्तराम:— अरे भाई कमज़ोरियाँ हर मनुष्य में होती हैं, उनपर नज़र न करना चाहिये अगर हर मनुष्य तुम्हारी तरह बिगड़ कर बैठा करे तो संसार का काम कैसे चले। छोटी छोटी बातें हैं इन पर इतना ध्यान न करो। बस अब .गुस्सा थूक दो, चलो मज़ा आजायगा.... (ज़रा सोचकर) और माना कि आपके .गुस्से के कारण है, फिर भी यहाँ बैठे बैठे कुढ़ने से आख़िर क्या फ़ायदा अपना ही जीवन यों बे-मज़ा कटेगा। यहाँ कोई ऐसा भी तो नहीं कि जी घबराये तो दो चार बातें करलो।

हुसेन.— (जिसने तक़रीर ग़ौर से नहीं सुनी है, उकता कर कहता है) जी हाँ मैं यहाँ आया था तो तहज़ीब और लुत्फ़ को छोड़ कर, और अब भी इनको दूर ही से सलाम है।

भक्तराम:— मगर आख़िर क्यों?

हुसेनः—(बेज़ार होकर) जनाब सुनिये, जो शख़्स हफ़्ते भर काम करने के बाद एक दिन गप मारे उसे तो इसमें मज़ा आसकता है और ऐसी तफ़रीह एक तरहसे उसका हक़ भी है। लेकिन हफ़्ते में सातों दिन बेजा बकवास करना वक़्त अकार्थ करना नहीं बल्कि ग़ुण्डापन है। मैं ख़ुद इसका तजुर्बा कर चुका हूँ। मुझे मालूम है कि जब कोई काम करने को न हो तो आदमी अपने आप इस रोगमें फँस जाता है। रहा काम, सो नौकरी मैं करना नहीं चाहता। ब्योपार का मुझे ढङ्ग नहीं आता। कोई हुनर मैं जानता नहीं कि इसमें अपनी जान खपाऊँ। क़ौमकी सेवा करने की मैं दो वर्ष चिन्ता में रहा परन्तु कोई भगवान् का दास ऐसा भी तो न मिला जो मुझे बता सके कि क्या करना चाहिये और क्यों और कैसे? सेवा सेवा सब चिल्लाते हैं मगर सिवा इसके कि वह चिल्लाते हैं मैं ने उन्हें और कोई सेवा करते नहीं देखा। मुमकिन है देश उनके इस तरह चिल्लाने से जाग उठे लेकिन यह जगाने का बहुत बुरा ढंग है। और हमारी क़ौम बड़ी ही निकम्मी है, अगर उठते ही वह अपने जगाने वालों के थप्पड़ न लगाए। मैं न क़ौम को इस तरह जगाना चाहता हूँ, न बाद को थप्पड़ खाने को तैय्यार हूँ,। क़ौम सोती है तो उसे उसकी नींद मुबारिक हो। मैं इसमें रुकावट नहीं डालना चाहता हूँ और जागे तो उसे नया जीवन मुबारिक। मेरे लिए यह ज़रा-सी खेती और मेरा छोटा-सा पाठशाला बस है। मुझमें न इतना साहस है

न इतनी शक्ति कि सारे देशके सुलाने या जगाने या ठीक मार्गपर चलाने का ठेका अपने सिर लूँ ।

भक्तराम:— वाह, वाह, वाह आप भी तुरन्त बिगड़ जाते हैं। मैं ने यों ही दोस्ताना ढँग पर कह दिया था कि शहर में चलकर रहिये। मैं आपको ना .खुश थोड़ा ही करना चाहता था यों तो आप जहाँ जी चाहे रहिये। मेरी तो इसमें कोई हानि नहीं। मैं ने तो ऐसे ही बात चीत में.......... ....

हिसामुद्दीन:— (कुछ देर सोचकर और ठन्डी साँस भर के) जी हाँ, वह महापुरुष जिनके भारी भरकम नाम आपने मुझको सहमाने के लिए सुनाये थे। आख़िर में सबके सब यही कह कर अलग हो जाते हैं। आपके अबदुलग़फ़ूर साहब ने क़ौम की सेवामें बड़ी धूमधाम से एक कपड़े की दुकान खुलवाई थी। किसी ब्योपारी ने बे सोचे समझे उसमें अपना रुपया लगा दिया। बेचारे का कपड़ा सारा मुफ़्त मँगवा कर पहन डाला और जब उसने ज़रूरत के वक़्त थोड़ा-सा रुपया उधार माँगा तो उससे ना खुश होगए। सारे शहर में मुनादी करदी कि इसके यहाँ से कोई भूले से भी बालिश्त भर कपड़ा न ले और बेचारे को बिल्कुल तबाह कर दिया। फिर यह दिखाने को कि एक अनाड़ी ब्योपारी के दीवालिया हो जाने से क़ौम निराश नहीं हो सकती उन्हों ने एक और मनुष्य को आटे की दूकान खोलने पर तरह तरह के वादे करके तैयार कर लिया। इसकी भी वह गति है कि .खुदा रहम करे।

भक्तराम:—(हँस कर) हाँ वह भी बहुत जल्द ख़त्म हो जायगी। कुछ हालात ऐसे ही हैं..................परन्तु अगर अब्दुलग़फ़ूर साहब में यह कमज़ोरी है कि वह हर काम से बहुत जल्द घबरा जाते हैं और साहस से उसमें जुते नहीं रहते तो इसका अर्थ यह नहीं है कि आप हों या कोई और सब ऐसा ही करेंगे। आपमें तो भगवान् की कृपासे साहस की कमी नहीं।

हिसामुद्दीन:— अब्दुलग़फ़ूर साहब हों या मैं या कोई और सभी एक से हैं। वही एक मोटी सी बात है जो किसी की समझ में नहीं आती..........अच्छा..........अगर आप चाय पी चुके हों और सैर करना चाहें तो चलिए। आपको अपना नया आमोंका बाग़ दिखा लाऊँ, नहीं तो फिर बहुत देर हो जायगी।

भक्त राम:—(जल्दी से चाय की प्याली पी कर) चलिए!

(दोनों उठकर चले जाते हैं।)

सवालात

१. शहरी ज़िन्दगी में आम तौर पर क्या बुराइयां पाई जाती हैं?

२. देहाती ज़िन्दगी शहरी ज़िन्दगी के मुक़ाबिल में किन बातों के लिहाज़ से अच्छी होती है?

३. प्रबन्ध, योग्यता, आवश्यकता, कर्त्तव्य, अनाड़ी, के माने बताओ और जुमलों में इस्तेमाल करो।

४. इन इबारतों का मतलब लिखो;-

(अ) दिल्दार हुसेन साहब हमारे शहर के बड़े नेता भी हमेशा से आप पर विश्वास रखते हैं। डाक्टर विजय कुमार जब देखिए इसी का दुखड़ा रोते हैं कि मेरा हिसामोद्दीन जब से गाव में जाकर बैठ रहा तबसे हमारी मन्डलियाँ सूनी पड़ गई हैं।

(ब) जब नाविक ही मुँह छुपा कर बैठ रहे तो क़ौम की नैय्या क्या ख़ाक पार हो सकती है ?

(ज) ह.फ्ते में सातों दिन बेजा बकवास करना वक़्त अकार्थ करना नहीं बल्कि .गुण्डा पन है।

१३ सच्ची शराफ़त

मैं पूछता नहीं हर्गिज़ तुम्हारा नाम ह क्या ।
न यह कि नाम बुज़ुर्गों का और मुक़ाम है क्या ॥
तुम्हारे काम गर अच्छे तो नाम अच्छे हैं ।
घराने अच्छे, घर अच्छे, तमाम अच्छे हैं ॥
जहाँ की दौलतो नेमत का याँ ख़याल नहीं ।
अमीर हो कि फ़क़ीर इससे कुछ सवाल नहीं ॥
कोई अमीर अगर है तो अपने घर बैठे ।
बुज़ुर्ग साहबे ज़र है तो लेके ज़र बैठे ॥
मुझे ग़रज़ नहीं कालेज में तुम पढ़ कि नहीं ।
जमाअतों में मदारिस की तुम चढ़े कि नहीं ॥
मगर जो मुँह से कहो उसका हो असर दिलमें ।
कि है किताबों में जो कुछ करे वह घर दिलमें ॥
अगर न पढ़ने को सब ख़ासो आम पढ़ते हैं ।
हज़ारों तोते हैं कलमा कलाम पढ़ते हैं ॥
जो मुझसे पूछो तो है फिर भी ना तमाम वह इल्म ।
तमाम जब हो कि पहुँचा ये फ़ैज़े आम वह इल्म ॥

वह इल्म जिससे कि औरों को फ़ायदा न हुआ ।
हमारे आगे बराबर है वह हुआ न हुआ ॥

सवालात

१. शायर के नज़दीक सच्ची शराफ़त किस बात में है ?

२. तीसरे, चौथे और पाँचवें शेर का मतलब बयान करो ।

३. इन लफ़्ज़ों को अपने जुम्लों में इस्तेमाल करो ।

साहबेजर, कलमा पढ़ना, ख़ासो व आम, फैज ।

——:o:——

१४ राम गोपाल की बहादुरी

मुर्शिदाबाद के किसी गाँव में एक बहुत बड़ा धनवान् रहता था। इसके बहुत से घर थे । एक दिन इनमें से एक मकान में आग लग गई । ऐसा होता है कि जब किसी मकान में आग लगती है, तो हवा तेज़, हो जाती है और दूसरे मकानों को भी जलाने लगती है । यही हाल वहाँ भी होने लगा । शोले रहरह कर बढ़ रहे थे । और आस पास के मकानों को भी झुलस रहे थे । किरायेदार डर के मारे इधर उधर भागने और आग आग का शोर मचाने लगे । यह सुनकर तमाम पड़ोसी इकट्ठे होगये और आग बुझाने का उपाय करने लगे ।

आग बुझाने वाले बहादुर चार जमाअतों में बँट गए । एक जमाअत तो औरतों और बालकों को मह.फ़ूज़ जगह पर .लेजानेके

लिए, दूसरी जमाअत तालाब से पानी लाने के लिए, तीसरी जमाअत मकानों की रक्षा के लिए, और चौथी जमाअत आग के शोलों पर पानी फेंकने के लिए मुक़र्रर हुई। इतने में एक औरत रोती हुई आई और एक कमरे की तरफ़ इशारा करके चिल्लाई "लोगो मैं लुटगई। मेरा नन्हा बच्चा अभी तक आग के शोलों में घिरा हुआ है। भगवान के लिए मेरी सहायता करो!" यह कह कर वह उस कमरे की तरफ़ बढ़ी और आग की लपटों में अन्धा धुन्द घुसने लगी। लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये?। आग ने घर को चारों तरफ़ से घेर रक्खा था। किसी मनुष्य का साहस नहीं होता था कि पास जासके। इस अवस्था में बच्चे को किस तरह बचाया जा सकता था। तमाम लोग परेशान खड़े थे। अकस्मात भीड़ चीरता हुआ एक नौ जवान राम गोपाल सामने आया। उसने पहले तो अपने तमाम कपड़े पानी से भिगो लिए और फिर अपने दोनों हाथों में पानी के घड़े उठा कर आग की तरफ़ लपका और जलते हुए मकान के दरवाज़े पर जा पहुँचा। लोगों ने इस विचार से कि अब कोशिश फ़िज़ूल है, वहाँ जाकर मुफ़्त में अपनी जान गँवानी है, नौजवान को इस कामसे बाज़ रखने की बहुत कोशिश की परन्तु वह अपने इरादे से न टला।

अगर्चे वह देख रहा था कि बच्चे तक पहुँचने का रास्ता बहुत ख़तरनाक है। इस पर भी उसने इन्सानी हमदर्दी के सामने

अपनी जान की कुछ भी परवा न की और आग के शोलों और चिन्गारियों में घुसता हुआ उस कमरे में पहुँच गया जहाँ वह नन्हा बच्चा था ।

रामगोपाल को शोलों ने झुलस दिया । आग की गर्मी से उसके कपड़े सूख गए थे । बड़ी ना.जुक स्थिति थी । एक तरफ़ से बच्चे के रोने की आवाज़ आरही थी । और दूसरी जानिब से आग की लपटें; रामगोपाल बच्चे की तरफ़ लपका । बच्चे को उठाया । कपड़े में लपेटा । और कन्धे से लगाकर पानी का घड़ा उसके और अपने ऊपर उँडेल लिया ताकि दोनों आग के हमले से बचे रहें ।

इसके बाद वह बाहर की तरफ़ दौड़ा और उसने दूसरा घड़ा भी अपने ऊपर उँडेल लिया और बड़ी फुर्ती से बाहर निकल आया । भगवान् की लीला देखो कि इन दोनों के दरवाज़े से निकलने के बाद ही चौखट धड़ाम से ज़मीन पर गिरपड़ी । अगर हमारा बहादुर नौजवान क्षण भर की भी देर करता तो दोनों के दोनों आग की भेंट चढ़ जाते । सच बात तो यह है "अगर थोड़ी-सी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता" ।

अब क्या था । हर एक यही कह रहा था शाबाश ! वीर पुरुष । चिरंजीव रहो और बच्चे की माँके आनन्द का तो अनुमान करना ही मुश्किल है । उसने दौड़ कर अपने बालक को छाती से लगा लिया और रामगोपाल के चरणों पर सिर रख कर रोने लगी ।

सवालात

१. माने बताओ। ? " धनवान, झुलसना, अन्धा धुन्ध, भेंट चढ़ना, अनुमान ॥

२. मतलब बयान करो। ? " आग के शोलों और चिन्गारियों के दामन में घुसता हुआ उस कमरे में पहुंच गया जहाँ वह नन्हा बच्चा था "।

" अगर थोड़ी सी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नहीं सकता "

३. क्या तुमने भी कोई बहादुरी का काम किया है। अगर किया है तो उसे बयान करो।

४. रामगोपाल की बहादुरी को मुख्तसर तौरपर अपने अलफ़ाज़ में बयान करो।

१५ त्रिवेणी

प्रयाग पे बिछड़ी हुई बहिनें जो मिली हैं।
किस शौक़ से इठलाती हुई साथ चली हैं॥

(१)

कुछ गंगा का रुकना
कुछ जमना का झुकना
फिर दोनों का मिलना
वह फूल-सा खिलना

कहते हैं कि जन्नत से भी आई है बहिन एक।
गो तीनों का है अस्ल में घर एक वतन एक॥

(२)

घर जबसे छुटा था
दिल सर्द हुआ था
वह कोह से गिरना
वह बनमें विचरना
कुछ दिन फिरीं सब दश्त में मैदान में बन में।
खामोश पहाड़ों में गुलिस्ताँ में चमन में॥

(३)

जंगल से निकलना
रुकते हुए चलना
कुछ बढ़के पलटना
डर डर के सिमटना
ख़ाली कभी जाती नहीं वे लफ्ज़ सदाएँ।
आखिर को असर कर गई खामोश दुआएँ॥

(४)

जागा है मुक़द्दर
प्रयाग पे आकर
अब ग़म न सहेंगी
तनहा न रहेंगी

प्रयाग पे बहिनों को मिलाया है ख़ुदाने।
मुद्दत में यह दिन आज दिखाया है ख़ुदाने॥

(५)

अल्लाह रे मोहब्बत
सर्मायये उलफ़त
यह किसको ख़बर थी
दिल मिलते हैं यों भी

क्या जोशे मुहब्बत से बग़लगीर हुई हैं।
ख़ुश बहिने हैं पानी पे या कलियाँ-सी खिली हैं॥
प्रयाग पे बिछड़ी हुई बहिनें जो मिली हैं।
किस शौक़ से इठलाती हुई साथ चली हैं॥

सवालात

१. प्रयाग पर कौन सी नदियाँ मिलती हैं?

२. दरियाओं की ख़ामोश दुआओं का क्या असर हुआ?

३. शायर ने दरियाओं के मिलाप का नक़्शा किस तरह खींचा है?

४. इन लफ़्ज़ों और मुहावरों को अपने जुमलों में इस्तेमाल करो।

दिल सर्द होना, बिछुड़ना, मुक़द्दर जागना, दिन दिखाना, इठलाना।

५. इनका मतलब लिखो।

प्रयाग पे बिछड़ी हुई बहिनें जो मिली हैं।
किस शौक़ से इठलाती हुई साथ चली हैं॥
ख़ाली कभी जाती नहीं ये लफ़्ज़ सदाएँ।
आख़िर को असर कर गई ख़ामोश दुआएँ॥

१६ डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर

डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारत के उन सपूतों में से हैं जिन पर केवल उनके देश ही को नहीं बल्कि सारे जगत को फ़ख़्र है। वह बँगाल के एक बड़े ज़मीन्दार, देवेन्द्रनाथ के बेटे थे और सन १८६१ ई॰ की बसंतऋतु में पैदा हुए। उन्हें बचपन से क़ुदरती नज़ारे देखने का शौक़ था और मदरसे की तालीम बिल्कुल पसन्द न थी। इसलिए उनके पिता इन्हें अपने साथ हिमालय की सैर को लेगए। वहाँ इन्होंने अपने पिता से अँग्रेज़ी, बंगाली, और संस्कृत पढ़ी। ग्यारह वर्ष की उम्र में रवीन्द्रनाथ बङ्गाली भाषा की कई बड़ी बड़ी किताबें पढ़ चुके थे।

रवीन्द्रनाथ छोटी उम्र ही से कविताएँ और मज़मून लिखने लगे थे, जो बंगाली रिसालों में छपते रहे इनके मज़मून रिसाला भारती

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

में छपते थे यह इन्हीं के ख़ान्दान का एक रिसाला था और इसकी एडीटर इनकी बहन श्रीमती श्रवण कुमारी देवी थीं।

रवीन्द्रनाथ बड़े गुणी आदमी थे। वह महा कवि अच्छी कहानी लिखने वाले और ऊँचे दर्जे के फ़िलास्फ़र थे। संगीत विद्या में भी इन्हें बड़ी मुहारत थी।

हर अच्छे कवि की शायरी में कोई न कोई ख़ास बात हुआ करती है। रवीन्द्रनाथ की कविता का ख़ास मज़मून प्रेम है। वह लोगों के दिलों में यह बात जमाना चाहते हैं कि हम सब भाई भाई हैं। देश प्रेम के लिहाज़ से भी इनकी शायरी बहुत ऊँचे जें की है। नज़्म के सिवा इनकी नसर तो ऐसी है कि इस रङ्ग में लिखने वाला हिन्दुस्तान में इनके सिवा कोई नहीं।

यों तो इनके कई नावेल, ड्रामे और नज़्में तमाम दुनिया में आम हैं लेकिन इनकी सबसे क़ीमती रचना "गीताञ्जलि" है, जिसपर इन्हें दो लाख रुपये का नोबल इनाम मिला था।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के माता पिता ब्रह्म-समाजी थे। इनका भी यही मत था। वह उपनिषदों को मानते हैं और उन्हें रवीन्द्रनाथ ने ख़ूब ग़ौर से पढ़ा है।

रवीन्द्रनाथ पहली मर्तबा १७ साल की उम्र में इंग्लिस्तान गए थे। इसके बाद उन्होंने कई मर्तबा यूरोप और अमेरिका की सैर की। विदेशी लोग इनके रास्ते में आँखें बिछाते थे। हिन्दुस्तान

की मशहूर कलकत्ता यूनीवर्सिटी ने इन्हें डाक्टर आफ़ लिटरेचर की डिग्री दी थी। और सरकार अँग्रेज़ी ने "सर" का ख़िताब दिया था।

ठाकुर ने सब से बड़ा काम जो किया वह यह है कि इन्होंने बोलपुर में एक मदरसा शान्ति निकेतन के नाम से खोला। यहाँ के उस्ताद दुनिया के मशहूर और नामवर लोग हैं और यहाँ लड़कों को बड़े दिल-चस्प तरीक़ों पर तालीम दी जाती है।

सवालात

(१) डाक्टर ठाकुर के हालात बयान करो?

(२) ठाकुर की सब से ज़्यादा मशहूर रचना कौनसी है? और इसपर उन्हें कौनसा इनाम मिला?

(३) अल्फ़ाज़ के माने लिखो और जुमलों में इस्तेमाल करो। फ़ख़, कविता, रचना, फ़िलास्फ़र संगीत विद्या.

(४) एक अच्छे कवि की हैसियत से रवीन्द्रनाथ ठाकुर में क्या ख़ास बात है॥

१७ फूल माला

रविशे ख़ास पे मर्दों की न जाना हर्गिज़ ।
दाग़ तालीम में अपनी न लगाना हर्गिज़ ॥
नाम रक्खा है नुमाइश का तरक़्क़ी व रिफ़ार्म
तुम इस अन्दाज़ के धोखे में न आना हर्गिज़ ॥
रंग है जिन में मगर बूये वफ़ा कुछ भी नहीं ।
ऐसे फूलों से न घर अपना सजाना हर्गिज़ ॥
नक़्ल यूरोप की मुनासिब है मगर याद रहे ।
ख़ाक में ग़ैरते क़ौमी न मिलाना हर्गिज़ ॥
तुमको कुदरत ने जो बख़्शा है हया का ज़ेवर ।
मोल इसका नहीं क़ारूं का ख़ज़ाना हर्गिज़ ॥
अपने बच्चों की ख़बर क़ौम के मर्दों को नहीं
यह हैं मासूम इन्हें भूल न जाना हर्गिज़
इनकी तालीम का मकतब है तुम्हारे पहलू ।
पास मर्दों के नहीं इनका ठिकाना हर्गिज़ ॥
काग़ज़ी फूल विलायत के दिखाकर इनको ।
देश के बाग़ से नफ़रत न दिलाना हर्गिज़ ॥
पर्वरिश क़ौम की दामन में तुम्हारे होगी ।
याद इस फ़र्ज़ को दिल से न भुलाना हर्गिज़ ॥
दिल तुम्हारा है वफ़ाओं की परस्तिश के लिए ।
इस मोहब्बत के शिवालय को न ढाना हर्गिज़ ॥

सवालात

१. इनके माने लिखो ? रविशेग्राम, फूलमाला, मकतब, विलायत, शिवालय,

२. आज़ादी के बारे में लड़कियों को शायर ने क्या नसीहत की है ?

३. इनका मतलब लिखो

नाम रक्खा है नुमाइश की तरक़्क़ी व रिफ़ार्म ।
तुम इस अन्दाज़ के धोखे में न आना हर्गिज़ ॥
काग़ज़ी फूल विलायत के दिखाकर इन को ।
देश के बाग़ से नफ़रत न दिलाना हर्गिज़ ॥

४. यूरोप की नक़ल करने में शायर ने किन बातों से बचने के लिए कहा है ?

५. लड़कियों को .क़ुदरत ने क्या .ज़ेवर दिया है, और इसकी .क़ीमत का अन्दाज़ा शायर ने क्या .क़ायम किया है ?

१८ —: कोहनूर की कहानी :—

मैं एक पत्थर का टुकड़ा हूँ फिर भी लोगों की नज़रों में बड़ा क़ीमती माना जाता हूँ। मेरी ज़िन्दगी में न जाने कितने छोटे बड़े आँधी तूफ़ान आए और गुज़र गए। इतनी तब्दीली शायद ही किसी के जीवन में हुई हो। मेरी उम्र अब काफ़ी लम्बी है और कई राजाओं और हुकूमतों को देखता भालता अब मैं इस अवस्था को पहुँचा हूँ।

हाँ तो मेरी कहानी सुनिये। मेरा जन्म गोलकुन्डा की एक सूनसान गुफ़ा में हुआ था। किस प्रकार मैं गोलकुन्डा के एक ब्योपारी के हाथ में पहुँच गया। मुझे अब ठीक ठीक याद नहीं है। अलबत्ता इतना ज़रूर याद है कि उस ब्योपारी के घर में बहुत दिनों तक नहीं रहा। धीरे धीरे मेरी ख़बर भारत सम्राट् शाहजहाँ के कानों तक पहुँची। मेरे मालिक ने उस समय अपने मन में यह विचार किया कि सम्राट् को जब इसकी ख़बर लग गई है तो जिस प्रकार हो वह इसे अपने पास बुला लेंगे इसलिये अगर यह नज़र के रूपमें पहले ही सम्राट् के पास पहुँच जाय तो मुँह माँगा इनाम मिलेगा यह सोचकर मेरा मालिक एक दिन मुझे लेकर दर्बार में हाज़िर हुआ। शाह जहाँ के दर्बार की शान शौकत देख कर सच मुच मेरे मन में घमण्ड हो गया। मन ही मन मैंने सोचा कि मेरे रहने के योग्य स्थान यही है। आप मुझ पर शायद यह सोचकर हँसेंगे कि एक

साधारण पत्थर के टुकड़े की इतनी उड़ान, परन्तु मैं यह जानता हूँ कि हर एक मनुष्य की यह इच्छा होती है कि वह सदा अच्छी हालत में रहे। हाँ तो सम्राट् शाह जहाँ को मुझे पाकर बड़ी .खुशी हुई और मेरे मालिक उस व्योपारी, को रुपयों का एक थैला दिया। कुछ दिनों बाद मैं जा पहुँचा भारत सम्राट् के माथे पर। इसके बाद से ही मेरे जीवन का वह हिस्सा शुरू हुआ जिसमें मैं एक राजासे दूसरे राजाके मस्तक पर चक्कर लगाता रहा, लेकिन जिस दिन से मै शाह जहाँ के माथे पर चढ़ा था उस दिन से लेकर आज तक में राजमस्तक से नीचे नहीं उतरा। बस एक मस्तक से दूसरे मस्तक का परिवर्तन करना पड़ा है।

शाह जहाँ जिस समय मुझे अपने राज मुकुट में लगा कर अपने दर्बार में तख़्ते ताऊस पर बैठते उस समय सचमुच में अपने को बड़ा खुश क़िसमत समझता था लेकिन " सब दिन जात न एक समान " अन्त में शाह जहाँ की क़िसमत का तारा डूबा और उसके साथ साथ मुझे भी बद नसीबी ने घेर लिया। औरंगज़ेब की नज़रों में मैं ने किसी दिन भी इज़्ज़त नहीं पाई। इसके बाद बहादुरशाह, मोहम्मद शाह, अहमद शाह, वग़ैरह कितने बादशाह एक एक करके आए और चले गए इनमें एक भी बहुत दिनों तक हुकूमत नहीं कर सका। इसके बाद आए मोहम्मद शाह दोयम और उनके साथ मेरे भाग्य के आकाश में घने काले बादल दिखाई पडने लगे। चारों ओर

शोर होने लगा "नादिर शाह आरहा है। नादिर शाह आरहा है" सब लोग दिल्ली छोड़ छोड़ कर भागने लगे। मैं भी कुछ डरगया और मन ही मन मैं यह सोचता था कि नादिर शाह कौन है और इससे डरने का आखिर कारण क्या है। बाद में सुना कि नादिर शाह एक भयानक सिपाही है। वह जहाँ जहाँ जाता है वहीं गीदड़ और गिद्ध दिखाई पड़ने लगते हैं। आख़िर एक दिन यह नादिरशाह दिल्ली पहुँचा और मुझे भी उस बे रहम आदमी को देखने का अवसर मिला। मोहम्मद शाहने न जाने किस बुरी घड़ी में मुझे हासिल किया था कि अब उसे सदा के लिए मुझ से हाथ धोना पड़ा। और मुझे भी अपनी जन्म भूमि से विदा होना पड़ा। मोहम्मद शाह के मस्तक पर मुझे देखते ही नादिर शाह का दिल मुझपर ललचाया और मन ही मन उसने एक फन्दा रचा। विदा होते समय वह मोहम्मद शाह से बोला "आओ अपने इस मिलन को सदा याद रखने के लिए हम दोनों अपने अपने ताज बदल लें" मोहम्मद शाह को मानना ही पड़ा यह क्या उसके लिए कम इज़्ज़त की बात थी। इतने बड़े वीर के ताज का अपने मस्तक पर धारण करना। नादिर शाह के मस्तक पर स्थान पाकर देश विदेशों में मेरी यात्रा आरम्भ हुई। नादिर मुझे साथ लेकर अपने वतन की ओर चल पड़ा। मार्ग में ऐसा कोई नहीं था जो रुकावट डालता। इसलिए हम जल्दी ईरान की हद पर आ पहूँचे, किन्तु नादिर को राजधानी में दाख़िल

होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ और इसीलिए मुझे भी ईरान की राजधानी देखने का अवसर नहीं मिला !

आखिरी रात एक कुशादा जगह में पड़ाव डाला था। बड़े छोटे सब ही आनन्द की नदी में डुबकियाँ लगा रहे थे। वह सनसान जगह भी एक रात के लिए शाही महल जैसी बन गई। अचानक नादिर के खेमे के अन्दर का प्रकाश बुझ गया। और साथ साथ शुरू हुआ हत्या कांड। पहले तो मैं समझ ही न सका कि बात क्या है ? किन्तु कुछ देर के बाद ही यह समझने में देर नहीं लगी कि नादिर की ज़िन्दगी अब खतम हो गई। अँधेरे में किसी ने मुझे हाथों में दबा लिया। मानो कोई नादिर को उसके जीवन की सबसे क़ीमती वस्तु कोहनूर से सदा के लिए अलहदा कर रहा है और उसका बोझ अपने कन्धे पर ले रहा है। सुबह होने पर पता चला कि मेरा बोझ ढोने वाला नादिर शाह का ही एक सेनापति अहमद शाह अब्दाली था। उस समय तक हम नादिर के खेमे से बहुत दूर आ पड़े थे, मैं, एक काले रंग का घोड़ा और हम दोनों का मालिक।

इसके बाद मैं बहुत अर्से तक अफ़ग़ानिस्तान में ही अड्डा जमाये रहा। कभी कभी अपने मालिक के साथ अपनी जन्म भूमि भी आ जाया करता था। कुछ दिनों बाद मैं देश से निकाले हुए शाह शुजा के हाथ में आ पड़ा। मैं पहले ही इस बात को ताड़ गया

था कि शाह शुजा में इतनी शक्ति नहीं कि मुझे ज़्यादा दिनों तक अपने पास रख सके। आख़िर बात भी वही हुई। पन्जाब के राजा रणजीत सिंह की नज़र मेरे ऊपर पड़ी। खोये हुए राज को फिर से दिलाने के बदले रणजीत सिंह ने शाह शुजा से मुझे माँग लिया। इन्कार करने की शक्ति तो शाह शुजा में थी ही नहीं।

इच्छा न रहते हुए भी उसे मेरी मुहब्बत को छोड़ना पड़ा और अब मैं राजा रणजीतसिंह के मस्तक पर आ बैठा। मैं भी .खुश था कि बहुत दिनों के बाद अपने देश को लौटा हूँ। किन्तु राजा रणजीतसिंह की मौत के बाद सिक्खों का राज्य अंग्रेज़ों के सामने बहुत दिनों तक नहीं टिक सका। रणजीतसिंह गए, खड़कसिंह गए, नौ निहालसिंह गए, शेरसिंह भी गए, आख़िर दिलीपसिंह के मस्तक पर जब मैंने आसन जमा रक्खा था, लार्ड डैल्हौज़ी ने पन्जाब का इलाक़ा और उसके साथ साथ मुझे भी लेलिया। मैं चला गया सात समुद्र पार, लन्दन शहर को। वहाँ पर चार राजा अब तक मुझे अपने मस्तक पर धारण कर चुके हैं और कौन जानता है कि मेरे भाग्य में आगे क्या लिखा हुआ है? सुना है कि मेरे देश वालोंने अंग्रेज़ी राज्य का जुआ उतार फेंका है। मुझे भी अपना देश बहुत याद आता है, देखिये परमात्मा कब वह दिन लाता है कि मैं फिर अपने देशको लौटने का सौभाग्य हासिल करूँ॥

सवालात

१. कोहनूर शाहजहां के पास कैसे पहुंचा ?

२. कोहनूर नादिर शाह के पास जाने के बाद फिर रणजीत सिंह के पास कैसे आया ?

३. कोहनूर की कहानी मुख़्तसर तौर पर लिखो।

४. वह अंग्रेज़ों के पास कैसे पहुंचा ?

---

१९ प्रेम दर्पण

इक नादिर क़िस्सा मैं सुनाऊँ। देखा नहीं जो तुमको दिखाऊं
करने शिकार इक रोज़ जहांगीर। आया वन में बहरे नख़्चीर
शाहन्शाहे हिन्दुस्ताँ था। रोबे शाही चितवन से अयां था
लू के सबब थी धूपमें गर्मी। फूँक रही थी प्यास की तेज़ी
एक ख़याबाँ दूरसे देखा। घोड़ा उड़ा कर वाँ तक पहुंचा
देखा पक्का इक मन्दिर है। मन्दिर क्या ही ख़ुश मन्ज़र है
सामने उसके चश्मा है ज़ारी और तरो ताज़ा फूलों की क्यारी
बरगद का वाँ एक शजर है। जिसके साये में इक घर है
देखा वहां इक हूरे लक़ा को। हुस्न की देवी होश रुबा को
रूप सिंगारी नाम था उसका। कहते थे सब प्यार से रूपा
देख जहाँगीर उसको बोला। भूल के रस्ता याँ आ निकला

बेटी थोड़ा पानी पिला दे। प्यास की मेरी आग बुझादे
करके स्वागत बोली वह लड़की। आप मुसाफ़िर हैं मैं समझी
बेहतर है घोड़े से उतरिये। पानी अभी लाती हूँ घर से
लड़की घरमें गई और आई। खाना पानी जाकर लाई
थाली में दो रोटिया जौ की। एक तरफ़ थोड़ी सी भाजी
पीतल की लुटिया में पानी। लाई और अदब से बोली
बासी मुँह तो पानी न पीजे। टुकड़ा रोटी का खालीजे
खाने लगा वह जौकी रोटी। भूल गया वह भोजन शाही
ग़ौर से देखा की वह लड़की। की मेहमां की खातिर दारी
हाथ में थी राजा के अँगूठी। जिसमें था याकूत इराक़ी
आँख पड़ी लड़की की उसपर। घर में गई और आई बाहर
काग़ज़ का इक बस्ता लाई। बस्ता उसका था आबाई
काग़ज़ इक उसमें से निकाला। लिखने लगी वह चार दह साला
बोली अदब से फिर यो रूपा। देखूँ ज़रा मैं हाथ तुम्हारा
शहने दहना हाथ बढ़ाया। हाथ का लिक्खा उसको दिखाया
लाने लगा अब रंग ख़ुशी का। हँस मुख चेहरा उस लड़की का
जोशमें उट्ठी वह मह पारा। उट्ठी और किसी को पुकारा
मन्दिर से इक बुढ़िया निकली। खन्दा लब खन्दा पेशानी
आई और बेटी से पूछा। यह तो वारिद कौन है रूपा
बोला मैं हे एक सिपाही। भूला भटका लशकर शाही
रस्ता भूल इधर आ निकला। पाया सुख और दिल हुआ ठंडा
खाना खिलाया पानी पिलाया। एक मुसाफ़िर का ग़म खाया

हँसने लगी यह सुनकर रूपा। सिर को झुकाया हाथ को जोड़ा
बोली मैं पहचान गई हूँ। सच कहते हो क्यों कर मानूँ
मेरे पिता ने जो था बताया। हाथ भी मुझको तुमने दिखाया
तुम हो शाहन्शाह हमारे। अनदाता हो बाह हमारे
बोला बुढ़िया से फिर हँसकर। अपना हाल कहो कुछ मादर
बोली बुढ़िया लेके सहारा। पूछते क्या हो हाल हमारा
कोई नहीं दुनिया में अपना। हाल सुनाऊँ अपना तुम्हें क्या
गाँव के जो हैं रहने वाले। खाने को हैं कुछ देजाते
पण्डित शर्मा व्यास इक आलिम। बीजापुर के शाही मुनज्जिम
ना .खुश होके छोड़के घर दूर। इस जंगल में बस गए आकर
बेटी को भी इल्म सिखाया। जो सीखे थे इस को बताया
इक दिन मेरे पति पण्डितजी। कहने लगे बेटी से अपनी
ज़ाएचा इस धरती का बनाओ। मैं भी बनाऊँ तुम भी बनाओ
उसने ज़ाएचा एक बनाया। बाप को अपने लाके दिखाया
बापने अपना और रूपा का। ज़ाएचा देखा यक सॉ पाया
कहने लगे छाती से लगा कर। बेटी तेरा भाग्य है बेहतर
इक दिन ऐसा आने वाला। बिगड़े काम बनाने वाला
होगा मेहमाँ शाहे देहली। उसकी करेगी तू मेहमानी
हाथ में उसके होगी अँगूठी। जिसका नगीं या.कूत है असली
आपको रूपाने पहचाना। हाथ को जब देखा तो जाना
आपका कहना मैं हूँ सिपाही। भूला भटका लशकर शाही
कौन इसको तस्लीम करेगा। आप हमारे हैं अन दाता
शाहन्शाह हँसा और बोला। कोइ भी हूँ मैं इससे ग़रज़ क्या

आज से तुम अम्माँ हो मेरी। रूपा मेरी बेटी हर्का की
फिर वह अँगूठी शाहने उतारी। बेटी कहकर उसको देदी
इतने में आवाज़ बिगुल की। मन्दिर के नज़दीक से आई
दस्ता सवारों का भी आया। खुश हुए सब जब शाह को पाया
सामने आकर की सफ़ बन्दी। फ़ौज ने बढ़ के सलामी उतारी
बोली बुढ़िया हंस कर राजा। खुल गया अब तो भेद तुम्हारा
कर न सका पोशीदा राज़ अब। कहने लगा शाह उस से यह तब
माई सच है यह सारी तहरीर। शाहे देहली मैं हूँ जहाँगीर
बोली बुढ़िया फिर रूपा से। शाह की अमानत शाह को देदे
इक ख़त जाकर लाई रूपा। शह को दिया वह, शहने खोला
फ़ारसी उसकी इबारत देखी। पंडित जी की लिखत देखी
शाहन्शाहे हिन्द सलामत। राज़ अफ़ज़ूँ हो उम्र व दौलत
हिन्दुस्ताँ का राज मुबारिक। तख़्त मुबारिक ताज मुबारिक
एक वसीयत है यह मेरी। बेवारिस है बच्ची मेरी
उसकी हिमायत दिलसे कीजे। उसको अपने साये में लीजे
शाह उसे फिर महल में लाया। लुत्फ़ व मोहब्बत से पेश आया
हुस्नो सलीक़ा देख के उसका। नूर जहाँ थी दिल से शैदा
शाहन्शाह ने उसकी मँगनी। ताली कोटा में ठहराई
एक ब्राह्मण पुत्र से शादी। धूम से आख़िर उसकी करदी
था वह कैसा अजीब मनज़र। शाहन्शाह जब आया अन्दर
शाह जहाँ भी साथ था उसके। कुल दरबारी उसको पीछे
निकला जहेज़ अन्दर से बाहर। सहन महल का भर गया यकसर

वाली कोटा की भी रियासत। शाह ने की रूपा को इनायत
सोलह लाख का हासिल जिसका। नाम पे था रूपा के लिक्खा
फिर इसमें लाखों का इज़ाफ़ा। शाह जहाँ ने भी फ़रमाया
आलमगीर ने भी शाहाना। दी जागीर उसे सालाना
शाहाना यह तर्ज़े अमल था। नख्ले मोहब्बत का यह फल था
हिन्दू मुस्लिम यों बाहम थे। ख़ुल्को करम में यों हमदम थे

सवालात

१. जहाँगीर किस तरह मन्दिर के पास जा निकला ?

२. रूपाने जहाँगीर की मेहमानदारी किस तरह की ?

३. बादशाह की अँगूठी देखकर रूपाने क्या कहा ?

४. जहाँगीर के बादशाह होने का भेद किस तरह खुला ?

५. रूपाने बादशाह को किस का ख़त दिया और उसमें क्या लिखा था ?

६. इनके माने लिखो और जुमलों में इस्तेमाल करो।
नादिर, ख़याबाँ, हूरेलक़ा, हाथका लिखा, शानी, ज़ायचा, भाग्य, ।

७. मतन के हवाले से इन शेरों का मतलब लिखो। ?

शाहाना यह तर्ज़े अमलथा ,' नख्ले मोहब्बत का यह फल था।
हिंदूमुस्लिम यों बाहम थे ,' ख़ुल्को करम में यो हमदम थे।

८. इसक़िस्से को अपने अलफ़ाज़ में बयान करो। ?

२० समुद्री तार

जब .खुश्की पर बिजली के तार से समाचार भेजने का ढङ्ग मालूम कर लिया गया तो बुद्धिमान यह सोचने लगे कि समुद्र पार समाचार भेजने का भी कोई ढंग निकालना चाहिये क्योंकि बिजली के तार का सबसे बड़ा लाभ तो यही है कि उसकी सहायता से दूर दूर के स्थानों तक बड़ी जल्दी से समाचार भेजा जासके। अगर इंगलिस्तान से हिन्दुस्तान और यूरोप से अमेरिका और वहां से आस्ट्रेलिया तक समाचार पहुंचने का प्रबन्ध न हुआ तो बिजली के तार का .फायदा ही क्या हुआ। चुनांचे आजसे कोई पचहत्तर वर्ष पहिले समुद्री तार बिछाए गए। और अब कोई तीन लाख मील लम्बे तार बहुत से समुद्रों में बिछे हुए हैं जिन्होंने पूरब और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण को एक दूसरे से मिला रक्खा है। समुद्री तार से एक दिन में कोई बीस हज़ार सँदेशे भेजे जासकते हैं और एक मील तार पर लग भग हज़ार रुपये .खर्च होते हैं। परन्तु यह तार तीस चालीस वर्ष तक बराबर काम देता रहता है। और इस मुद्दत में मरम्मत की बहुत कम ज़रूरत पड़ती है।

सन १८४९ ई. का ज़िक्र है कि दो साइन्सदानों ने इंगलिस्तान और फ्रांस की हुकूमतों से आज्ञा हासिल करके आबनाय डोवर में समुद्री तार बिछाया। यह तार ताँबे का बना हुआ था, और एक किश्ती की मददसे समुद्र की तहमें बिछाया गया था।

लेकिन पहली ही रात गुज़रने के बाद यह तार बेकार होगया। और एक तरफ़ से भेजा हुआ संदेश दूसरी तरफ़ न पहुँच सका। इसलिए दूसरी बार बहुत मज़बूत तार तैयार करके डोवर से केले तक लगाया। यह तार कामयाब रहा। और इँगलिस्तान और फ्राँस के दरमियान समाचार भेजने का काम जारी होगया। दो ढाई वर्ष के बाद इँगलिस्तान और आयरिस्तान के दरमियान भी इसी प्रकार का तार समुद्र में बिछादिया गया। इसके बाद दूसरे समुद्रों में भी समुद्री तार बिछानेका काम आरम्भ हो गया। लेकिन इस काम में अनगिनती कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बहुत सी जगहों पर तार टूट गये और एक दो जगह समुद्र की तह में गुच्छा होकर रह गए। क्योंकि वह बिछाते समय ढीले रह गए थे।

सन १८५७ ई. में कुछ लोगों ने इँगलिस्तान से अमेरिका तक समुद्री तार बिछाने का इरादा किया। चूँकि तीन हज़ार मील की दूरी थी और रास्ते में स्टेशन बनाने के लिए कोई जगह न थी, इस लिये बहुत से लोगों ने इस काम की हँसी उड़ाई। लेकिन अमेरिका और इँगलिस्तान की हुकूमतों ने तार लगाने वालों की सरपरस्ती की और उन्हें कुछ जहाज़ भी देदिये जिससे वह पहले रास्ते की देख भाल करलें, इसके बाद तार बिछाएँ। कारीगरों ने दो बार कोशिश की मगर दोनों बार तार टूट गया। क्योंकि समुद्र की जोरदार लहरें तार को ज्यों का त्यों नहीं रहने देती थीं।

दूसरे वर्ष कुछ और मनुष्य इस काम पर तैयार होगये जिन्हों ने तीन बार असफल होने के बाद अन्त में तीन हज़ार मील लम्बा तार बिछा ही दिया। और ५ अगस्त सन १८५८ ई. में अमेरिका के प्रेसिडेन्ट ने इँगलिस्तान की महारानी विक्टोरिया से समुद्री तार के ज़रिये सलाम और संदेश अदल बदल किया।

आज उत्तर अटलान्टिक सागर में अट्ठारह समुद्री तार लगे हुए हैं और इनके सिवा बहुत से तार चीन और जापान के समुद्रों में भी बिछाए जा चुके हैं। यह चार मील गहरे समुद्र में बिछे हुए हैं। जब पहले पहल समुद्री तार बिछाए गए तो उनके ज़रिये से संदेश भेजनेकी सबसे तेज़ रफ्तार छः लफ्ज़ फ़ी मिनट थी। लेकिन आज अटलान्टिक के तारों में पचास शब्द फ़ी मिनट की रफ्तार से संदेश भेजा जासकता है और अगर ज़रूरत पड़ जाए तो रफ्तार एकसौ ल.फ्ज़ फ़ी मिनट तक भी बढ़ाई जासकती है।

समुद्री तार ऊपरसे देखने में एक मोटे रस्से जैसा होता है। यही सबब है कि उसे अंग्रेज़ी में " केबल " कहते हैं। केबल का सारा ढङ्ग .खुश्की के तारों के ढंग से मिलता जुलता है। फ़र्क़ इतना है कि समुद्र में तार की जगह " केबल " बिछाए जाते हैं ताकि समुद्र की ज़ोरदार लहरें उसे तोड़ न सकें। ताँबे का मज़बूत तार लेकर उसपर " गटापारचा " लपेटा जाता है, जो एक क़िस्म का रबड़ होता है। इसके बाद मशीनों की सहायता से उसपर बहुत

मज़बूत तार चढ़ा कर एक बड़ा मोटा और भारी रस्सा सा बट दिया जाता है। इसी को केबल कहते हैं। केबल की बनावट में बहुत चौकसी बरती जाती है। क्यों कि अगर उसका थोड़ा सा भाग भी कमज़ोर रहजाए तो वह समुद्र की तह में काम नहीं देता। और बहुत जल्द टूट जाता है। लहरों के सिवा बड़ी बड़ी मछलियां और समुद्र के डरावने जानवर भी इस केबल से लिपट जाते हैं लेकिन इसकी मज़बूती के कारण इस को हानि नहीं पहुँचा सकते।

केबल का समुद्र में बिछाना सबसे बढ़कर कठिन काम है। इसके लिए ख़ास जहाज़ मुक़र्रर किए जाते हैं। जिनमें सैकड़ों मील लम्बा केबल फिरकियों पर लिपटा हुआ तैयार रहता है। यों समझो कि हमें बम्बई से लंदन तक समुद्री तार बिछाना है तो बम्बई में जो सबसे बड़ा तार घर है, वहां केबल का एक सिरा बिजली के आलों में जोड़ कर रखदिया जायगा। इसके बाद हम केबल को समुद्र की तरफ़ लेजाएंगे और तार घरसे समुद्र के किनारे तक एक खाई खोद कर उसमे केबल रख देंगे और इसके बाद उस खाई को पाट देंगे! फिर समुद्र के तट से एक जहाज़ इस केबल को लेकर रवाना होगा फिरकियां घूमने लगेंगी, और तार खुल खुल कर समुद्र में डूबता चला जायगा। इस केबल पर जगह जगह बड़े बड़े पीपे लगाये जायेंगे। जो समुद्र के ऊपर तैरते रहेंगे ताकि आने जाने वाले जहाज़ों को मालूम रहे कि इस रास्ते पर केबल

लगा हुआ है । जब जहाज़ अदन पहुच जायगा तो केबल का आखि़री सिरा वहाँ के तार घर में पहुँचाकर बिजली के आलों में जोड़ दिया जायगा । अब बम्बई के तार घर में टिक टिक कीजिये तो इसकी गूँज अदन के तार घर में सुनाई देगी और इस ढंग से संदेश भेजने का प्रबन्ध हो जायगा ।

अगर कभी सन्देश पहुँचने में देर हो, या शब्द ठीक ठीक न पहुँचे तो मालूम होजाता है कि तार में कोई ख़राबी होगई है । चुनाँचे केबल वाला जहाज़ तुरन्त समुद्र में जाकर तार को देखता है । बड़े बड़े इन्जीनियर और बिजली के माहिर इस जहाज़ में सवार होते हैं । वह जगह जगह समुद्र से तार को निकाल कर गौर से देखते हैं । समुद्र से तार को बाहर निकालने के लिए अनोखे कुन्डों, ज़न्जीरों और काँटों से काम लिया जाता है । जब यह कुन्डो और काँटे तार तक पहुँच कर उसे पकड़ लेते हैं तो जहाज़ वाले ज़न्जीर खींचना शुरू करदेते हैं । यहाँ तककि तार जहाज़ तक पहुँच जाता है। वहाँ उसकी मुनासिब सुधार कीजाती है और फिर उसी ढंग से बिछादिया जाता है ।

समुद्री तार से हज़ारों मील लम्बे चौड़े समुद्रों में से एक दो मिनट के अन्दर अन्दर दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक संदेशा पहुँच जाता है । मित्रों और रिश्तेदारों की ख़ैरियत मालूम होजाती है । व्योपार की चीज़ों के भाव मालूम होजाते हैं। इस तरह इनकी वजहसे धरती सिकुड़ कर छोटी होगई है ।

सवालात

१. इन अल.फाज़ के माने बताओ और जुमलों में इस्तेमाल करो !

ढंग, केबल, दिक़्क़त,

२. सन १८४९ ई, सन १८५७ ई. और सन १८५८ इ. में समुद्री तार के सिलसिले में क्या अहम काम अन्जाम पाए ?

३. केबल किस तरह तैयार किए जाते हैं !

४. अगर तुम्हें बम्बई से अदन तक समुद्री तार का सिलसिला .कायम करनेकेलिए कहा जाय तो तुम यह सिलसिला किस तरह .कायम करोगे !

२१ सेवा

१

दर्द जिस दिलमें हो उसकी मैं दवा बन जाऊँ।
कोई बीमार अगर होतो सुधा बन जाऊँ।
दुःख में हिलते हुए लब की मैं दुआ बन जाऊँ।

२

हाय वह दिल जो तड़पता हुआ घरसे निकले।
उफ़ वह आँसू जो किसी दीदए तरसे निकले।
मैं उस आँसू के सुखाने को हवा बन जाऊँ।

३

दूर मन्ज़िल से अगर राह में थक जाय कोई।
जब मुसाफ़िर कहीं रस्ते में भटक जाय कोई।
ख़िज़्र का काम करूँ राहनुमा बन जाऊँ॥

४

उम्रके बोझ से जो लोग दबे जाते हैं।
नातवानी से जो हर रोज़ झुके जाते हैं।
उन ज़ईफ़ों के सहारे का असा बन जाऊँ॥

५

ख़िदमते ख़ल्क़ का हर सिम्त में चरचा कर दूँ।
मादरे मुल्क को जन्नत का नमूना कर दूँ।
घर करे दिल में जो "अफ़सर" वह सदा बन जाऊँ॥

सवालात

१. इस नज़्म को पढ़ने से तुमको क्या सबक़ मिलता है?

२. इनको जुमलों में इस्तेमाल करोः—मुधा, दीदए तर, ख़िज़्र का काम करना, सहारा, असा, दिलमें घर करना।

३. इन शेरों का मतलब लिखो।

(अ) उम्र के बोझसे जो लोग दबे जाते हैं। नातवानी से जो हर रोज़ झुके जाते हैं। उन ज़ईफ़ों के साहरे का असा बन जाऊँ॥

(ब) दूर मन्ज़िल से अगर राह में थक जाय कोई।
जब मुसाफ़िर कहीं रस्ते में भटक जाय कोई।
ख़िज्र का काम करूँ राह नुमा बन जाऊँ ॥

४. आदमी को किन किन लोगों की ख़िदमत करनी चाहिये ?

२२ इम्तिहान

(१) जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजान सिंह बूढ़े हुए तो उन्हें परमात्मा की याद आई। उन्होंने महाराज से जाकर अर्ज़ किया कि "महाराज! मैं ने चालीस साल तक महाराज की सेवा की, अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता हूँ। दूसरे अब मैं बूढ़ा भी हो गया हूँ, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल चूक हो जाय तो बुढ़ापे में दाग़ लगे। सारी ज़िन्दगी की नेक नामी मिट्टी में मिल जाय"।

राजा साहब अपने बूढ़े दीवान का आदर करते थे उन्होंने बहुत समझाया लेकिन जब दीवान ने न माना तो हार मान कर उसकी अर्ज़ स्वीकार कर ली। लेकिन शर्त यह लगादी कि रियासत के लिए नया दीवान उस ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देशके मशहूर अख़बारों में यह ख़बर छपी कि देवगढ़ के लिए एक योग्य दीवान की ज़रूरत है। जो साहब अपने आपको इस ओहदे के क़ाबिल समझें वह सरदार सुजान सिंह की ख़िदमत में हाज़िर हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वह ग्रेजुयेट हों मगर उनका तन्दुरुस्त होना ज़रूरी है। एक महीने तक उम्मेदवारों के रहन सहन और चाल चलन की जाँच की जायगी। विद्या का कम लेकिन कर्त्तव्य का ज़्यादा विचार किया जायगा। जो साहब इस इम्तिहान में पूरे उतरेंगे। उन्हें रियासत का दीवान बनाया जायगा।

(२) इस ख़बर से मुल्क भर में हल चल मच गई। इतना बड़ा ओहदा और उम्र या तालीम की कोई क़ैद नहीं, सिर्फ़ क़िस्मत का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए नए और तरह तरह के लोग दिखाई देने लगे। हर रेल गाड़ी से उम्मेदवारों का एक मेला सा उतरता। कोई पञ्जाब से चला आता था तो कोई मद्रास से। कोई नये फ़ैशन का प्रेमी था तो कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ था। पण्डितों और मौलवियों को भी अपने अपने भाग्य की परीक्षा करने का मौक़ा हाथ आया। बेचारे सनद के नाम को रोया करते थे। यहाँ उसकी ज़रूरत ही न थी। भाँति भाँति के अँगरखे और पगड़ियाँ देवगढ़ में अपनी सज धज दिखाने लगीं। लेकिन सब से ज़्यादा गिन्ती ग्रेजुयेटों की थी। क्योंकि सनद की क़ैद न होने पर

भी सनद से पर्दा तो ढका रहता है। सरदार सुजान सिंह ने इन उम्मेदवारों की तमाम ज़रूरतों का अच्छा प्रबन्ध कर दिया था। यह लोग अपने अपने कमरों में बैठे हुए महीने के दिन गिना करते थे। हर एक आदमी अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूपमें दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर अलिफ़ नौ बजे दिन तक सोया करते थे। आज कल वह बाग़ीचे में टहलते हुए सुबह का सीन देख कर मज़े लेते थे। मिस्टर (बे) और (जीम) से उनके घरों के नौकरों का नाक में दम था। लेकिन आज कल यह हज़रात आप और जनाब के बिना नौकरों से बात चीत नहीं करते थे। एक साहब को किताबों के नामसे चिढ़ थी लेकिन आज कल वह बड़े बड़े ग्रन्थ खोले, पढ़ने में डूबे रहते थे। जिस से बात चीत कीजिए, वह शराफ़त और भल मन्सी का पुतला मालूम होता था। शर्माजी बड़ी रात ही से वेद मन्त्र पढ़ने लगते थे और मौलवियों को भी नमाज़ और .कुरान पढ़ने के सिवा और कोई काम ही न था। लोग समझते थे कि एक महीने की झंझट है। किसी तरह काट लें, जो कहीं इच्छा पूरी होगई, तो फिर कौन पूछता है। परन्तु बूढ़ा दीवान आड़ में बैठा देखरहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।

३. एक दिन नए फ़ैशन वालों को सूझी कि आपस में हाकी मैच होजाय। यह राय हाकी के मँझे हुए खिलाड़ियों ने दी

थी। यह भी तो आखिर एक हुनर है, इसे क्यों छिपा रक्खें। मुमकिन है कुछ हाथों की सफ़ाई ही काम कर जाय।

चलिये तै हो गया। ठीक पांच बजे दोनों टीमें मैदान में आगईं और खेल शुरू हो गया। देवगढ़ में वह खेल एक निराली बात थी। पढ़े लिखे भले मानस शतरन्ज और ताश जैसे खेल खेला करते थे। दौड़ कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे। खेल बड़े ज़ोर से जारी था। जब एक खिलाड़ी फुर्ती से गेंद लेकर बढ़ता तो ऐसा जान पड़ता कि दरिया की एक लहर उमड़ी चली आ रही है। लेकिन दूसरा खिलाड़ी भारी चट्टान की तरह इस लहर को रोक देता।

शाम तक यही धूम धाम रही। खिलाड़ी पसीना पसीना हो गये। ख़ून की गर्मी आँखों और चेहरे से झलक रही थी। हाँफ्ते हाँपते बेदम होगए लेकिन हार जीत का फ़ैसला न होसका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा हटकर एक नाला बहता था। उस पर कोई पुल न था। खेल अभी बन्द ही हुआ था और खिलाड़ी बैठे दम लेरहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए इस नाले को पार करने लगा। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को ज़ोर लगाकर हाथों से ढकेलता। लेकिन बोझ ज़्यादा था और बैल कमज़ोर थे गाड़ी ऊपर को न चढती। और चढ़ती तो कुछ दूर चढ़

कर फिर खिसक कर नीचे पहुँच जाती। किसान बराबर ज़ोर लगाता और बार बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी चढ़ने का नाम न लेती। बेचारा निराश होकर इधर उधर देखता मगर वहाँ कोई मदद करनेवाला दिखाई न देता था। गाड़ी को अकेले छोड़कर वह कहीं जा भी न सकता था। बड़ी मुसीबत में फँसा हुआ था। इतने में खिलाड़ी हाथों में डण्डे लिए झूमते झामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ़ सहमी हुई आँखों से देखा परन्तु किसी से सहायता माँगने की हिम्मत न हुई। खिलाड़ियों ने भी उसे देखा, मगर बन्द आँखों से जिनमें हमदर्दी नाम को न थी घमण्ड का नशा था। बेपरवाई थी। परन्तु इस जमाअत में एक आदमी ऐसा भी था जिसके दिल में दया थी और हिम्मत थी। आज हाकी खेलते हुए उसके पाँव में चोट लग गई थी। वह लँगड़ाता हुआ धीरे धीरे चला आता था। अकस्मात् उस की नज़र गाड़ी पर पड़ी। वह ठिठक गया और एक ही नज़र में मामले की तह तक पहुँच गया। उसने डण्डा एक किनारे रख दिया। कोट उतार दिया। और किसान के पास जाकर बोला, घबराओ नहीं मैं तुम्हारी मदद करूँगा।

किसान ने देखा कि एक गठीले बदन का लम्बा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला, सरकार मैं आपसे कैसें कहूँ। नौजवान ने कहा मालूम होता है, तुम यहाँ बहुत देर से फँसे हुये हो। अच्छा तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को सँभालो मैं पहियों को ढकेलता हूँ अभी गाड़ी चढ़ी जाती है।

किसान गाड़ी पर जा बैठा। नौजवान ने पहियों में ज़ोर लगा कर उसे खिसकाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा था। वह घुटनों तक कीचड़ में धँस गया। लेकिन उसने हिम्मत न हारी। उसने फिर ज़ोर लगाया। उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला। उन की भी हिम्मत बँध गई। उन्हों ने कन्धे झुकाकर एक बार ज़ोर किया। बस गाड़ी नाले के पार थी।

किसान नौजवान के सामने हाथ जोड़कर खड़ा होगया और बोला "महाराज आपने मुझे बड़ी मुसीबत से बचा लिया। नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता"। नौजवान ने हँसकर कहा "अब मुझे कुछ इनाम देते हो"। किसान ने गम्भीरता से जवाब दिया। "भगवान चाहेंगे तो दीवानी आपही को मिलेगी"।

नौजवान ने किसान की तरफ़ गौर से देखा उसे शुबह हुआ क्या यह सुजान सिंह तो नहीं हैं? आवाज़ मिलती है। चेहरा मोहरा भी वही है। किसान ने उसपर गहरी नज़र डाली। वह शायद उसके दिल की बात को भाँप गया। मुसकुराकर बोला "गहरे पानी में बैठनेसे मोती मिलता है"।

४. आख़िर महीना पूरा हुआ और चुनाव का दिन आपहुँचा। उम्मेदवार सवेरे ही से अपने भाग्य का फ़ैसला सुनने के लिए बे चैन थे। दिन काटना पहाड़ होगया। हर एक के चेहरे पर आशा और निराशा का एक रंग आता और एक जाता था। नहीं मालूम आज किसके भाग जागेंगे।

शामके व.क्त राजा साहब का दर्बार सजा। शहर के रईस और अमीर, हुकूमत के ओहदेदार और दरबारि और दीवानी के उम्मेदवार सब रंग बिरंग के कपड़े पहने दर्बार में हाज़िर होगए। तब सरदार सुजान सिंह ने खड़े होकर कहा।

" दीवानी के उम्मेदवारों! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है उसके लिए क्षमा कीजिए। मुझे इसके लिए एक ऐसे आदमी की ज़रूरत थी जिसके दिल में दया और सेवा की उमंग हो। इस रियासत की .खुशकिस्मती स हमें ऐसा आदमी मिल गया है। ऐसे गुण वाले लोग दुनिया में बहुत कम हैं।

" मैं रियासत को पण्डित जानकीनाथ जैसा दीवान मिलने पर धन्यवाद देता हूँ "

सवालात

१. दीवान सुजान सिंह ने महाराज से क्या अर्ज़ की थी ?

२. दीवानी के उम्मेदवारों में क्या क्या खास बातें थीं ?

३. किसान कौन था ? नाले पर से उसकी गाड़ी किस तरह पार हुई पूरा किस्सा बयान करो।

४. किस उम्मेदवार को कामयाबी हासिल हुई और क्यों ?

५. इन लफ्ज़ों को अपने जुमलों में इस्तेमाल करो।
शक्ति, बुद्धि, अनुसार, भलमन्सी घमण्ड, हिम्मत बँधना, भाग्य, निराशा, भले मानस,

६. हाकी किस तरह खेलते हैं और कितने खिलाड़ी खेलते हैं ?

२३ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ लारी

बाक़ी कोई सुल्ताँ का हवा ख़्वाह नहीं है।
इक तू ही अकेला है जो गुम राह नहीं है॥
लड़ने लगे जब आके मुग़ल क़िले के दर पर।
बिजली की तरह टूट पड़ा तू भी अदू पर॥
हर जोड़ तेरा ज़ख़्म से बेकार हुआ है।
कमज़ोरी से सिर तन पे गिराँ बार हुआ है॥
तू एक इधर और मुक़ाबिल तेरे लश्कर।
आख़िर को गिरा एक जा बेहोश तू हो कर॥
ले जाते हैं अब तुझको शहन्शाह की जानिब।
नज़रें हैं मगर तख़्ते .क़ुतुब शाह की जानिब॥
वाँ पर भी गवारा न किया ग़ैर का एहसाँ।
रद कर दिया यहकह के शहंशाह का फ़र्मां॥
रोके से मेरा जोशे वफ़ा रुक नहीं सकता।
गर्दन मेरी कट सकती है सिर झुक नहीं सकता॥
ऐ मर्दे .ख़ुदा क़द्रे वफ़ा तू ने बढ़ा दी।
.क़ुर्बां तेरे! मालिक के लिए जान लड़ा दी॥

सवालात

(१) अब्दुर्रज़्ज़ाक़ लारी कौन था?

(२) लारी ने अपनी वफ़ादारी का क्या सुबूत दिया?

(३) लेजाते हैं अब तुझको शहंशाह की जानिब ।

नज़रें हैं मगर तख़्ते .कुतुब शाह की जानिब ॥

इस शेर में शायर ने किस तरफ़ इशारा किया है खोल कर बयान करो ।

(४) मतलब बताओ ।

वाँ पर भी गवारा न किया ग़ैर का एहसाँ ।

रद कर दिया यह कह के शहंशाह का फ़र्माँ ॥

रोके से मेरा जोशे वफ़ा रुक नहीं सकता ।

गर्दन मेरी कट सकती है सिर झुक नहीं सकता ॥

२० सीताजी

हिन्दुस्तान की स्त्रियों में जो शोहरत रामचंद्रजी की पत्नी सीताजी ने पाई है वह किसी दूसरी स्त्री को नसीब नहीं हुई ।

सीताजी के पिता राजा जनक मिथिला के राजा थे । यह उनकी इकलौती बेटी थीं । इसलिए बड़े लाड़ प्यार से इनका लालन पालन हुआ । यह वह ज़माना था जब वीर योद्धाओं को बड़े क़द्र की नज़रों से देखा जाता था । इस लिए राजा जनक ने प्रण किया था कि जो कोई इनके पास रक्खे हुए एक बहुत बड़े धनुष का चिल्ला चढ़ायेगा वही इनकी प्यारी पुत्री सीताजी को पायगा ।

जब सीताजी की सुन्दरता और गुणों का चर्चा तमाम भारत में फैल गया तो दूर दूर के राजा इन से व्याह करने की इच्छा करने लगे। परन्तु जब स्वयंवर हुआ तो अयोध्या के राजकुमार रामचंद्रजी के सिवा जिनके बल और बाणविद्या में योग्यता की घर घर चर्चा थी और कोई धनुष का चिल्ला चढ़ाना तो अलग रहा उसे अपनी जगह से हिलाने में भी सफल न हो सका। रामचन्द्रजी ने चिल्ला चढ़ाने के लिए धनुष को इतना खींचा कि उसके दो टुकड़े होगए। राजा जनक ने अपने प्रणके अनुसार इनके साथ सीताजी का विवाह कर दिया। और वह इनको लेकर अयोध्या में वापस आए जो उनके पिता राजा दशरथ की राजधानी थी।

कुछ समय बाद राजा दशरथ ने जो बूढ़े होचले थे राजकाज रामचन्द्रजी को सौंपना चाहा। रामचन्द्रजी पहले ही से प्रजा के बहुत प्यारे थे परन्तु राजा दशरथ की दूसरी रानी कैकेई को यह बात बुरी मालूम हुई। वह राजा की बहुत प्यारी थी और उसने राजा से अपने पुत्र भरत जी के लिए राज और अपने सौतेले बेटे रामचन्द्रजी के लिए चौदह वर्ष का बनवास चाहा। पिछले ज़माने में राजा दशरथ रानी कैकेई की दो इच्छाओं को पूरा करने का बचन दे चुके थे। इसलिए वह बड़ी चिन्ता में पड़ गए। रामचन्द्रजी की मोहब्बत उन्हें बचन पूरा करने से रोक रही थी। अन्त में वह प्यारे पुत्र की जुदाई के ख़्याल से बेसुध होगये। जब रामचन्द्रजी को

यह बात मालूम हुई तो वह .खुद ही पिता के पास गए और अपने प्यारे बाप के बचन को पूरा करने के विचार से बनवास के लिए तैयार हो गए। इस बनवास में भी उनकी पतिव्रता स्त्री सीताजी और उनके प्यारे भाई लक्ष्मणजी ने उनका साथ न छोड़ा और ये तीनों अयोध्या की जनता को रोता छोड़कर बन की ओर चलदिये और कई वर्षों तक बन में सफ़र करने के बाद आख़िर पंचवटी पहुँचे।

एक दिन रामचन्द्रजी जिस तरफ़ शिकार के लिए गए उधर से यह आवाज़ आई कि भाई लक्ष्मण जल्दी मेरी सहायता को पहुँचो। यह आवाज़ लङ्का के राजा रावण की एक चाल थी जिससे वह लक्ष्मण जी को सीताजी के पास से हटाना चाहता था। आवाज़ सुन कर लक्ष्मणजी सीताजी को अकेला छोड़कर भाई की मदद के लिए चले गए। इनका जाना था कि रावण सीताजी को उठा कर ले गया।

जब रामचन्द्रजी वापस हुए और सीताजी को न पाया तो बहुत बेकल हुए और जंगल जंगल तलाश करते फिरे। आख़िर कर्नाटक के राजा सुग्रीव से इसबारे में सहायता चाही। सुग्रीव की आज्ञा से उसके मन्त्री हनुमानजी समुद्र पार करके लंका पहुँचे और सीताजी से मिलने के बाद रावण से भी मिले और उससे सीताजी को छोड़ देनेके लिए कहा परन्तु रावण ने एक न सुनी। आख़िर हनुमान जी सीताजी को शान्ति देकर वापस हुए और सारा हाल रामचन्द्रजी से बयान किया।

रामचन्द्र जी ने मजबूर होकर राजा सुग्रीव की सहायता से लङ्का पर चढ़ाई का इरादा किया और बहुत बड़ी फ़ौज पुल बाँधकर लङ्का पर उतार दी। जङ्ग से पहले अङ्गदजी राजा सुग्रीव के प्रधान मन्त्री को दुबारा रावण के समझाने को भेजा, मगर जब रावण सीधे रास्ते पर न आया तो रामचंद्र जी की सेना ने धावा बोल दिया। घमासान का रण पड़ा और रावण रामचंद्र जी के हाथ से मारा गया।

इस लड़ाई में कामयाब होने के बाद रामचंद्र जी सीताजी को साथ लेकर बड़ी धूम धाम से अयोध्या पहुँचे क्योंकि बनवास की मुद्दत पूरी होचुकी थी। सीता जी ने अपनी सेवा और पति भक्ति से अपने पति के दिल में घर कर लिया था।

एक दिन रामचंद्र जी के एक जासूस ने बयान किया कि एक आदमी अपनी पत्नी से झगड़ा करके यह कहता था कि मैं रामचंद्र नहीं हूँ कि तू मेरी आज्ञा बिना चली जाय और फिर वापस आने पर मैं तुझे अपने घर में जगह दे दूँ। अपनी प्रजा में से एक आदमी का यह विचार जानकर और संसारियों के लिए एक मिसाल क़ायम करने की ज़रूरत सोचकर रामचंद्र जी ने अपनी चहेती पत्नी को जंगल ही में भेज देना अच्छा समझा और लक्ष्मण जी को आज्ञा दी कि वह सीताजी को जङ्गल में छोड़ आएँ। लक्ष्मण जी गर्भवती सीता जी को जंगल में बाल्मीकि ऋषि की मँढ़ी के पास

छोड़ आये। कुछ दिनों के बाद वहीं लव और कुश दो आँवले जाँवले बालक पैदा हुए जो ऋषि जी की देख रेख में परवान चढ़े।

जिस वक्त रामचंद्र जी ने अश्वमेध यज्ञ करना चाहा और यज्ञ का घोड़ा छोड़ा गया तो लव और कुश दोनों भाइयों ने इस घोड़े को रोक लिया। घोड़े की देख भाल करने वालों से इन दोनों भाइयों का बड़ा युद्ध हुआ। इन्होंने रामचंद्र जी की सेना के तमाम वीरों को हरा दिया तो अन्त में ख़ुद रामचंद्र जी को युद्ध के लिए आना पड़ा परन्तु बाल्मीकि जी से इन दोनों बालकों का हाल सब को मालूम हो गया। उन्होंने अयोध्या की प्रजा से यह भी निवेदन किया कि वह सीताजी को वापस बुला लें क्योंकि वह निर्दोष हैं। अयोध्या वासियों ने भी इस बात पर अपनी अनुमति प्रकट कर दी। रामचंद्र जी को तो ऐसी नेक पत्नी की जुदाई दूभर हो रही थी। इस दरख़्वास्त पर वह सीता जी से मिलने के लिए चल खड़े हुए, लेकिन सीताजी जो दुःख सहते सहते और कठिनाइयाँ उठाते उठाते बहुत कमज़ोर हो गई थीं, इस ख़बर के सुनते ही ख़ुशी के मारे चल बसीं। बालमीकिजी की रामायण में लिखा है कि ज़मीन ने फट कर सीता जी को अपनी गोद में ले लिया।

ग़रज़ सीता जी बड़ी पति भक्त सुशीला और सदाचारिणी स्त्री थीं। और वह सदा भारत की स्त्रियों के लिए आदर्श रहेंगी।

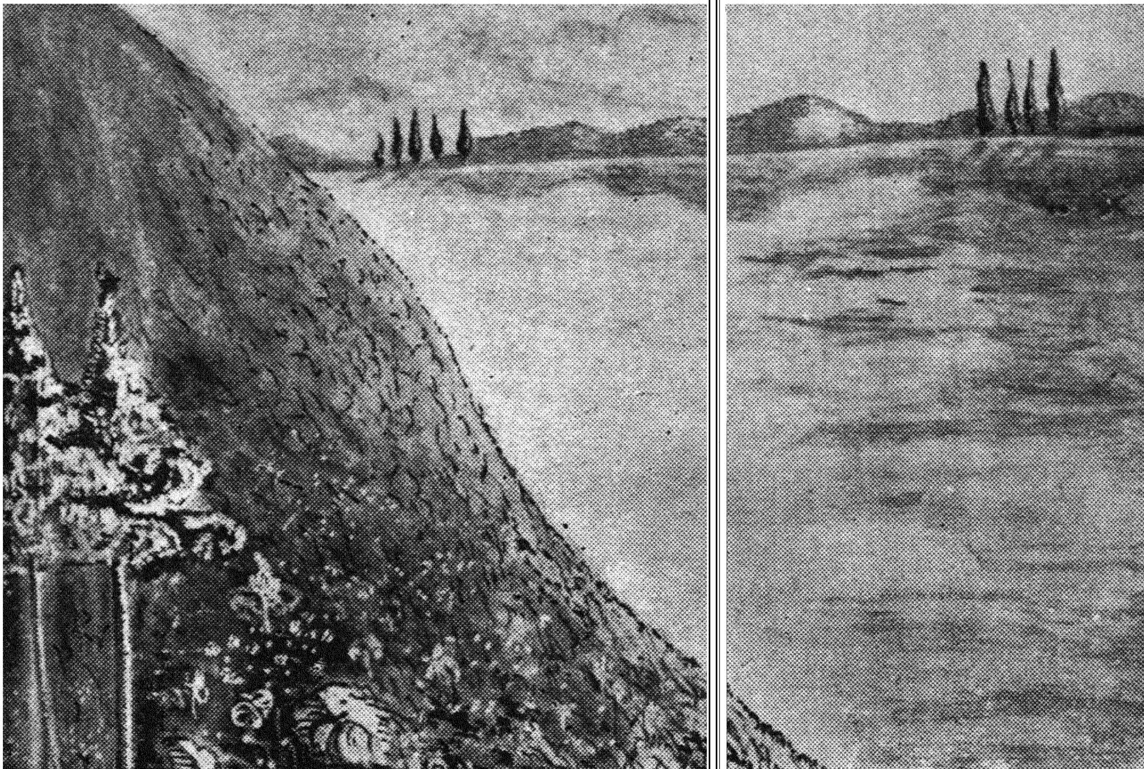

नीलगिरी की सैर

सवालात

१. माने बताओ ? अश्वमेध यज्ञ, रण पड़ना, सेना, युद्ध, सुशीला ।

२. सीताजी का मुख्तसर हाल बयान करो ।

३. रावण कौन था ?

४. लव और कुश कौन थे इनका हाल लिखो ।

——:o:——

२५ नील गिरि की सैर

की सैर हर एक गुलिस्ताँ की । देखी रंगीनी इक जहाँ की ॥
दौलत यह मगर कहीं न पाई । जो नीलगिरि में हाथ आई ॥

कोनूर वेलिंगटन और ऊटी ।
मैं ने सबकी बहार लूटी ॥

है सब्ज़ दरख्त की जो कोंपल । हर पंखड़ी उसकी सुर्ख़ मखमल ॥
पोशाक हरी है लाल ज़ेवर । अतलस पे टकी है सुर्ख़ झालर ॥
आता नहीं कुछ समझ में अपनी । कहिए उन्हें फूल या कि पत्ती
नीचे जंगल में झाड़ियाँ हैं । ऊपर ऊँची पहाड़ियाँ हैं ॥
चोटी पे कहीं कहीं सनोबर । एक एक से रास्ती में बढ़कर ॥
शमशाद देवदार युकलिप्टस । दिन को फ़रिश्ते शबको राक्षस ॥
मोटे मोटे बड़े बड़े हैं । देवों की तरह वह सब खड़े हैं ॥

है सूर्ये फ़र्क़ हर इक का मैलान ।
इनसे पैदा पहाड की शान ॥

है राग परिन्द का वह दिल कश। सब करते हैं जिसको सुनके अशअश॥
पेड़ों पे यह क्या फुदक रहे हैं । सर मस्त हैं अरु चहक रहे हैं ॥
क्या नाच रहे हैं गारहे हैं । बस फूले नहीं समा रहे हैं ॥
नाले दिन रात चल रहे हैं । चश्मे चाँदी उगल रहे हैं ॥
पानी है चटानों से निकलता । .गुल शोर मचाता और मचलता॥
चलने से कभी नहीं यह थकता । रस्ते से कभी नहीं भटकता ॥
ठोकर पे यह खा रहा है ठोकर । है शौक़ ही सिर्फ़ उसका रहबर ॥
तै करके पहाड़ और सहरा । कतराके चटान और टीला ॥
रहता है पहुँच के ता ब मंज़िल । कब रोकती इसको कोई मुश्किल॥
किस ज़ोर से नाला बह रहा है। कुछ अपनी ज़बाँ में कहरहा है ॥
गर चाहिए तुझको कामरानी । कर मेरी तरह कलेजा पानी ॥

तू भी छाती पे रखले पत्थर ।
टकरा यूँ ही कोह व दश्त से सर॥

है कितना बुलन्द डोडा बाटा मिलता है फ़लक से जिसका डांडा॥
ऊँचाई में नौ हज़ार फ़िट है । आती है नज़र यहाँ से हर शै ॥
सब सर व फ़लक पहाड़ याँ से। देते हैं दिखाई सिर्फ़ टीले ॥
लो उठे वह वादियों से बादल । और छागए उनके चार सू दल ॥
अब अब्र नया यह रूप लाया । है धूप कहीं कहीं है साया ॥

तारीक़ कहीं कहीं उजाला ।
चितकबरा है पहाड़ अबसारापा ॥

दामन पे बिछा है सब्ज़ मखमल। और चोटी पे खेलते हैं बादल॥
इक दूसरे को यह रेलते हैं। फिर आँख मिचोली खेलते हैं॥
चोटी पे कभी हैं जा धमकते। दामन में कभी हैं आ दुबकते॥
पीछे से हमें यह आके ढाँके। चुपके से हमें यह आके ढाँके॥
बच्चों की तरह कभी यह मचलें। हर वक़्त नया यह रूप बदलें॥
उजले नीले कभी हैं काले। यह रूई के नर्म नर्म गाले॥
अक़्लीमे ज़मीं पे आसमाँ की। होगी कोई दम में अब चढ़ाई॥
वह देने लगी सुनाई झन्कार। चलने लगीं बिजलियों की तलवार॥
यह राद यह वर्क़ और बारिश। है असल में जंग की नुमाइश॥

है ज़ेर कोई कोई न बाला।
बाला है फ़क़त ख़ुदा तआला॥

सवालात

(१) इनको जुमलों में इस्तेमाल करो ?

कोंपल, पोशाक, मन्ज़िल, रूप, दामन, अक़लीम।

(२) नीलगिरि के दरख़्तों की क्या हालत बयान की गई है ?

(३) नाले की रवानी से तुम्हें क्या सबक़ मिलता है ?

(४) बादल और बच्चे किस तरह एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। ?

२३ अम्बरी नहर

यह देखकर अचम्भा होता है कि जहाँ पुराने ज़माने में हिन्दुस्तान के इल्म और फ़न में बड़ी तरक़्क़ी हुई, शान्दार भवन बने, बड़े बड़े नगर बसे वहाँ लोगों के फ़ायदों के कामों पर काफ़ी तवज्जह नहीं की गई। यह तो कहना मुश्किल है कि उस ज़माने में एक जगह से दूसरी जगह पानी पहुँचाने को लोग नहीं जानते थे क्यों कि राजाओं के महलों के खँडहरों में ऐसी निशानियाँ पाई जाती हैं, जिससे पता लगता है कि आबरसानी का अच्छा प्रबन्ध था, लेकिन अवाम के लिए इसी प्रकार के प्रबन्ध का अबतक कुछ पता नहीं चला है।

हिन्दुस्तान के लम्बे चौड़े इतिहास में प्रजा की भलाई के कामों के कारण दर्मियानी ज़माना एक सितारे की तरह चमकता है। यह वह ज़माना है जब अवाम के लिए सड़कें बनाई गईं, बाग़ लगाए गए और नहरें निकाली गईं। लेकिन अफ़सोस है कि वक़्त बहुत थोड़ा था और काम बहुत कम हुआ।

अवाम का फ़ायदा चाहने वालोंमें मलिक अंबर का दर्जा बहुत ऊँचा है। यह निज़ामशाही बादशाहों का सेनापति और दौलताबाद का सूबेदार था। वह जैसा ऊँचे इरादे वाला सेनापति था वैसा ही बहुत बड़ा इञ्जीनियर भी था। उसका आबरसानी का काम जहाँ

तक इतिहास से पता चलता है हिन्दुस्तान में सब से पहला और आख़िरी है।

सन १६०४ ई. में जब मलिकअम्बर ने क़स्बा खिड़की को जिसे अब औरङ्गाबाद कहते हैं अपना मुस्तक़र बनाकर उसे फ़तहनगर का नाम दिया तो लोगों की भलाई के लिए पहला काम यह किया कि वहाँ आबरसानी का अच्छा प्रबन्ध करदिया। आबरसानी का यह काम आजतक अम्बरी नहर के नाम से मशहूर है। इसकी यह हालत है कि नहर में पानी जमा भी होता है, इसी में छनता भी है और फिर मिट्टी के नलों में जो जाल की तरह फैले हुए हैं, शहर में बँट जाता है। इस नहर की लम्बाई पौने तीन मील है। और यह एक ऐसी जगह से शुरू होती है जो शहर की सबसे ऊँची जगह है। नहर बाज़ जगह पाँच और चार फ़िट गहरी है और सँगोई नदी के ऊँचे किनारे के बराबर ढलाव के साथ बहती है और इसका बड़ा हिस्सा नदी की तह से बहुत नीचा है। इस बात को कौन नहीं जानता कि पानी ढलवान की तरफ़ बहता है चुनाँचे ज़मीन के अन्दर का पानी नदी की तह में नहीं जाता बल्कि इस नहर में आजाता है। यों देखो तो नहर एक छोटी-सी सुरङ्ग है जो ज़मीन के सख़्त लेकिन मसामदार हिस्से में खोदी गई है। इस के दोनों किनारों पर किसी क़िस्म की रोक थाम नहीं की गई है ताकि अतराफ़ से ज़मीन के नीचे का पानी आसानी से इकट्ठा हो सके। सुरङ्ग के ऊपर का हिस्सा पत्थर की कमानों से ढक दिया

गया है, जिससे ऊपर मिट्टी की भरत रह सके। इसकी चौड़ाई कुछ कम ज़्यादा ढाई फ़ीट है और इसकी गहराई ढाई और पन्द्रह फ़ीट के दरमियान है। इसके शुरू और आख़िरी हिस्से की सतह में जो शहर के बाहर गोमुख के पास ख़तम होता है, एक सौ चालीस फ़ीट का अन्तर है। जिसके कारण पानी बड़ी .कुव्वत के साथ बहता है। गोमुख से कुछ ही दूर शहर के ऊँचे नीचे हिस्से हैं जिनकी वजह से .कुव्वत और बहाव के साथ पानी लेजाना मुमकिन न था। चुनाँचे इन बातों के कारण इस हिस्से में मिट्टी के नल बिछाए गए हैं। यह मिट्टी के नल मामूली कवेलू (खपरेल) के जैसे हैं। अन्तर सिर्फ़ इतना है कि इनका घेर ज़्यादा बड़ा है और मकानों की कवेलुओं की तरह दो टुकड़े नहीं हैं और सिरों पर डॉट (हल्के) बने हुए हैं जिस से एक दूसरे में जुड़ कर लम्बे लम्बे नल बनसकें। मगर इन मिट्टी के नलों में इतनी जान नहीं है कि यह पानी के दबाव या ऊपर की मिट्टी के बोझ को सँभाल सकें। इस लिए इनको कंकरीट से घेर दिया गया है। जहाँ कहीं यह नल गहरी वादियों में से गुज़रे हैं वहाँ इनको ईंट और पत्थर की कमानों से बहुत मज़बूत कर दिया गया है। नलों की क़तारों पर जगह जगह ईंट के खोखले खम्भे बना दिए गए हैं, ताकि नलों में की हवा बाहर निकलजाए और छोटे नल घरों और हौज़ों के लिए लगाए जासकें। अवाम अपनी ज़रूरतों को हौज़ों से पूरा करते थे और खाते पीते लोग अपने घरों में नल लगा लेते थे।

जब औरंगज़ेब सन १६५३ ई. में दक्षिण का सूबेदार हुआ तो उसने फ़तहनगर को अपना मुस्तक़र बनाकर औरंगाबाद का नाम दिया जो उसके राजा बनने के बाद सल्तनत की राजधानी बनगया। इससे औरंगाबाद की आबादी बहुत बढ़ गई और पानी की कमी होने लगी, जिसको दूर करने के लिए अम्बरी नहर को तरक़्क़ी दी गई और कई नई नहरें खोदी गईं। यह बयान किया जाता है कि तरक़्क़ी के ज़माने में जब कि औरंगाबाद की आबादी दो लाख थी, अम्बरी नहर के सिवा इस क़िस्म की बारह नहरें शहर में पानी पहुँचाया करती थीं। उनमें से थोड़ी अब भी चालू हैं और बाक़ी अपनी गई गुज़री हालत में भी थोड़ी सी दुरुस्ती के बाद दूसरी ज़रूरतों के लिए काम आसकती हैं।

जब हम अपनी आबरसानी का यूरोप की आबरसानी से मुक़ाबला करते है तो एक अनोखा फ़र्क़ पाते हैं। देशी काम में एक कौड़ी भी मुल्क के बाहर नहीं जाती बल्कि जो कुछ भी रुपया ख़र्च होता है वह उसी जगह या उसके आस पास फैलजाता है, जहाँ काम किया जाता है। पानी के जमा करने, छानने और साफ़ करने या तक़सीम करने में भी कुछ ख़र्च नहीं होता है। औरंगाबाद में आबरसानी का प्रबन्ध बड़े पैमाने पर है लेकिन इसकी देख भाल में चन्द सौ रुपये साल से ज़्यादा ख़र्च नहीं होते और इस कम ख़र्च में भी नहर बिला खटके तीनसौ साल से काम देती चली आरही है।

यह मुल्क की .खुशकि़स्मती है कि मलिक अम्बर ने जो काम किया है उसका सिलसिला अब तक जारी है और हैदराबाद की हुकूमत एक बड़ी स्कीम के मुताबिक़ प्रजा के लिए आबरसानी का प्रबन्ध नये ढंग से करती चली जाती है ।

सवालात

१. इनके माने बताओ ? आबरसानी, सुरंग, भवन, प्रजा, प्रबन्ध, अन्तर, ।

२. मलिक अंबर के बारे में तुम क्या जानते हो ?

३. अम्बरी नहर में पानी के जमा होनें, छननें और शहर में फैलने का तरीक़ा बयान करो ?

४. औरंगाबाद में पानी की कमी क्यों थी और उसे किस तरह दूर किया गया ?

१७ ग़ज़लें

(१)

ज़माने चमन गुल खिलाती है क्या क्या ।
बदलता है रंग आस्माँ कैसे कैसे ॥
अजब क्या छुटा रूह से जामये तन ।
लुटे राहमें कारवाँ कैसे कैसे ॥
न गोरे सिकन्दर न है क़ब्रे दारा ।
मिटे नामियों के निशाँ कैसे कैसे ॥
दिलो दीदिये अहले आलम में घर है ।
तुम्हारे लिए हैं मकाँ कैसे कैसे ॥
करे जिस क़दर शुक्रे न्यामत वह कम है ।
मज़े लूटती है ज़बाँ कैसे कैसे ॥

सवालात

१. इनके माने लिखो:—जामये तन, कारवाँ, अहले आलम, मज़े लूटना, ।

२. मतलब बयान करो:—

अजब क्या छुटा रूह से जाम तन ', लुटे राहमें कारवाँ कैसे कैसे ।।

न गोरे सिकन्दर न है क़ब्रेदारा ', मिटे नामियों के निशाँ कैसे कैसे ।।

(२)

ज़िनहार हो जियो न दिला मुब्तलाय हिर्स।

ज़िल्लत भी दौड़ी आती है नादाँ कफ़ाए हिर्स॥

दुनिया में दर बदर मुझे कब तक फिराए हिर्स।

यारब! क़नाअत आए कहीं और जाय हिर्स॥

दुनिया की सारी ख़ाक अगर हो ग़िज़ाय हिर्स।

ऐसी ही, ऐ हरीस! रहे इश्तहाय हिर्स॥

तोड़ूँ जो अपने पाए तलब फ़ायदा नहीं।

तदबीर वह करूँ कि शिकस्ता हो पाए हिर्स॥

है किश्तिए नजात क़िनाअत ही ग़ाफ़िलो।

डूबेंगे बहरे ग़म में जो हैं आशनाए हिर्स॥

सवालात

१. इनके माने लिखोः— काफ़ाए हिर्स, क़नाअत, इश्तहा, नजात।

२. मतलब बताओः—

दुनिया की सारी ख़ाक अगर हो ग़िज़ाय हिर्स। ऐसी ही, ऐ हरीस! रहे इश्तहाए हिर्स॥

है किश्तिए नजात क़िनाअत ही ग़ाफ़िलो। डूबेंगे बहरे ग़म में जो हैं आशनाए हिर्स॥

फ़र्ज़

अगले वक्तों का ज़िक्र है कि कोई शख़्स एक बार 'साइबेरिया' नामी जहाज़ में अमेरिका से वापस आ रहा था, वह अपने सफ़र का हाल यों बयान करता है कि इस जहाज़ का कप्तान कामरान एक नेक दिल और फ़र्ज़ की बड़ी पाबन्दी करने वाला इंसान था। इसके नाविक भी अपना अपना कर्त्तव्य बड़ी ख़ुशी से पूरा करते थे। कामरान का बेटा रेनाल्ड भी इन्हीं नाविकों में से एक था।

जब हमारा सफ़र पूरा होने को था तो कप्तान ने कहा कि कल दिन निकलने से पहले आयर लैन्ड का किनारा नज़र आ जायगा लेकिन रात क्या आई एक बला आई। बड़ा भयानक अँधेरा था। बादल की कड़क, बिजली की चमक, हवा का ज़ोर, पानी का शोर हर एक की हिम्मत पस्त किए देता था। सब तो अपने अपने कमरों में घुस गए और सोने के लिए बिस्तरों पर जा लेटे। लेकिन मैं अकेला वहीं बैठा हवा की डरावनी आवाज़ें सुनता रहा। डेक पर भी कोई आदमी न था। इतने में ऐसा शोर हुआ जिसे सुनकर सब चौंक पड़े। चारों तरफ़ से आग आग ही की आवाज़ें सुनाई देती थीं। मैं भी सुनकर उछल पड़ा। क्या देखता हूँ कि सब के सब ऊपर भाग जाने की फ़िक्र कर रहे हैं और सीढ़ियों पर वह भीड़ है कि एक शख़्स भी घबराहट के मारे ऊपर नहीं चढ़ सकता।

पूछने पर मालूम हुआ कि आग जहाज़ के अगले हिस्से में लगी है और जहाज़ के तमाम अधिकारी उसके बुझाने की बहुत कोशिश कर रहे हैं। जिस वक्त मैं जहाज़ के तख्ते पर पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि मुसाफ़िर उस तरफ़ से इस तरफ़ दौड़ते फिरते हैं और जहाज़ के साथ की नावों को समुद्र में उतार रहे हैं।

मैं ने कभी ऐसा डरावना सीन नहीं देखा था। हर एक को जान के लाले पड़े थे। कुछ आस थी तो साथ की किश्तियों पर थी कि इनके कारण इस बला से बच निकलेंगे मगर उन किश्तियों का यह हाल था कि इधर समुद्र में बार बार डाली जाती थीं और उधर जहाज़ पर से धमा धम आदमी उनमें कूद पड़ते और वह पानी भर कर डूब जाती थीं। आधे घण्टे के बाद एक किश्ती भी बाक़ी नहीं रही और आग बराबर उसी तेज़ी से जहाज़ के पिछले हिस्से की तरफ़ बढ़ती चली गई। जहाज़ का तख्ता आदमियों से भर गया क्योंकि जहाज़ के सारे मर्द, औरतें और बच्चे सिमट कर वहीं आगए थे। रात भर हम बड़ी मेहनत से कोशिश करते रहे कि आग एंजिन घर तक न पहुँचने पाए और जब सुबह हुई और हमने बड़ी मायूसी से चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई तो पश्चिम की तरफ़ बहुत दूर एक नीली सी लकीर नज़र आई। यकायक मुँहसे निकला हाय ज़मीन, हम तुझ तक पहुँच सकते!

कप्तान कामरान जल्दी से जहाज़ के डेक पर चढ़ गया और एक नज़र में भाँप लिया कि क्या होने वाला है? हुक्म दिया कि

जहाज़ को सीधा ज़मीन की तरफ़ फेर दो और एंजिन को पूरी ताक़त पर ले आओ लेकिन रात भर की लगातार मेहनत से सब बे दम हो रहे थे। हाँ एक शख़्स हम में ऐसा था, जो सब से ज़्यादा मेहनत करने और आग के अनगिनत चरके खाने से भी नहीं थका था। वैसी ही फुर्ती और चालाकी से अपना काम किये जाता था। वह कौन था? यह वही रेनाल्ड कामरान का बेटा था। बदन के कपड़े जल गए थे। सिर के बाल झुलस चुके थे। तमाम चेहरा काला पड़ गया था। मगर क्या मुमकिन कि आग के मुक़ाबले में एक क़दम भी पीछे हट जाय। वहीं डटा खड़ा था। ज्यों ही कप्तान का यह हुक्म सुना अपना जलता हुआ पाजामा सँभालता एंजिन की तरफ़ दौड़ा लेकिन अफ़सोस है कि उसका हाथ लोहे की सलाख़ पर से रपट गया और वह धड़ाम से समुद्र में जा पड़ा।

उसका बाप भी मेरे पास खड़ा उसको देख रहा था। पहले तो वह जल्दी आगे की तरफ़ झपटा, शायद यह चाहता था कि एंजिन रोक कर जहाज़ को वापस लाने का हुक्म दे मगर फिर उसने मुसाफ़िरों की भीड़ की तरफ़ मुड़ कर देखा और कुछ सोच कर अपना हाथ जो एंजिन ड्राइवर की तरफ़ जहाज़ की वापसी का इशारा करने के लिये उठाया था नीचा कर लिया। उसने ख़याल किया कि अगर जहाज़ लड़के की तरफ़ वापस ले जाता हूँ तो यह थोड़ा सा वक़्त भी जिस में शायद किनारे तक पहुँच जाएँ हाथ से जाता रहेगा और सारे मुसाफ़िर समुद्र की भेंट चढ़ जायँगे। इस से तो यह अच्छा

है कि एक मेरा लड़का जान से जाए और यह सब बच जाएँ और कर्त्तव्य पूरा हो। लड़के को .खुदा पर छोड़ा और जहाज़ को पहले की तरह चलने दिया।

अब ज़रा रेनाल्ड का हाल सुनिये। जहाज़ से गिरा तो कोई बीस गज़ दूर जाकर उभरा और तुरन्त अपना दायाँ हाथ उठाया। मैं समझा कि सहायता माँगने के लिए होगा लेकिन उसे अपनी जान की कुछ परवा न थी उसने बड़े ज़ोर से चिल्लाकर कहा "चले जाओ चले जाओ, मेरी कुछ चिन्ता न करो।" कप्तान ने जङ्गले की सलाख़ थाम कर अपना मुँह किनारे की जानिब फेर लिया और फिर मुड़कर बेटे की तरफ़ न देखा।

जहाज़ पानी को चीरता हुआ तीर की तरह चला जाता था। इस तेज़ी से शोले और भी भड़क उठे मगर इसके सिवा छुटकारे का कोई उपाय न था। कप्तान कामरान ने स्त्रियों और बालकों को पीछे करके मर्दों की क़तार उनके आगे खड़ी कर दी ता कि उन तक आग सब के बाद पहुँचे। गर्मी अब सहार से बाहर हो गई। और हमको विश्वास हो गया कि एक दो मिनट के बाद मौत के लिए हमें आग या समुद्र दोनों में से एक को चुनना होगा।

उस समय मैं ने धरती की तरफ़ नज़र डाली। क्या देखता हूँ कि हर ख़लीज और खाड़ी में से हमारी तरफ़ किश्तियाँ चली आती हैं और सब से आगे एक भाप की किश्ती बड़ी तेज़ी से बढ़ी चली आ रही है। उस वक़्त मैं ने सच्चे दिल से प्रार्थना की कि ऐ मरतों को

बचाने वाले भगवान १५ मिनट एंजिन का बॉयलर और न फटे ! शुक्र है कि मेरी दुआ कबूल हुई और दस ही मिनट के बाद किश्ती हम तक पहुँच गई और हमने औरतों और बच्चों को उसपर सवार करना शुरू कर दिया। इतने में और किश्तियाँ भी आ पहुँचीं। और बड़ी जल्दी से उस में सवारियाँ उतारी गईं मगर अब आग इतनी ज़्यादा फैल गई थी कि हर मिनट हम को बॉयलर के फट जाने का डर था। जहाज़ के डेक पर खड़ा भी न हुआ जाता था। इतने में कप्तान ने आवाज़ दी "बादबान डाल दो और समुद्र में कूद पड़ो"।

यह सुनते ही हम कूद पड़े। किश्तियों ने हमें चारों तरफ़ से घेर लिया और कोई मनुष्य डूबने न पाया। लेकिन अभी हमारे होश ठिकाने न आये थे कि बॉयलर फटने की एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी और जलती हुई लकड़ियाँ हर तरफ़ उड़ती मालूम हुईं। इसके बाद जहाज़ धीरे धीरे डूबने लगा और चन्द मिनट में नज़र से ओझल हो गया।

जब हम ज़मीन के नज़दीक पहुँचे तो हमें एक सिगनल हौस में उतार दिया गया। यह घर हमारे लिए काफ़ी न था। मगर ज्यों त्यों-करके सब उसी में ठुँस गए। जिनको अन्दर जगह न मिली वह बरा-मदों में बैठे रहे। लेकिन अभी हमारे दिल बहुत उदास थे और हमारे चेहरों से दुःख टपका पड़ता था क्योंकि हम जानते थे कि हम सबकी जानें कप्तान की कोशिश और अक़्लमन्दी से बची हैं, मगर उसकी

जान को बड़ा भारी दुःख पहुँचा है। हमको दिन भर यहाँ रहना पड़ा। शाम के वक़्त गार्ड के सिपाहियों में कुछ हल चल मालूम हुई। मैं कारण मालूम करने गया तो एक उनमें से बोला कि फ़ास्ट नट के स्थान से बिजली के तार से हमें कुछ सँदेश दिया जारहा है, मगर हमारी समझ में नहीं आता। सिर्फ़ इतना फ़िक़रा समझ में आता है कि हमने समुद्र से बचा लिया। बाक़ी मालूम नहीं क्या कहते हैं। एक किश्ती भी उन्होंने इस तरफ़ भेजी है। इसके एक घण्टे बाद सबने शोर मचाया। मैं भी दौड़ा। क्या देखता हूँ कि मियाँ रेनाल्ड अच्छे ख़ासे हैं और किश्ती में से उतर कर ख़ुश्की पर आ रहे हैं। कप्तान कामरान भी शोर सुनकर मेरे साथ ही बाहर निकला था। बेटे को देखते ही बाग़ बाग़ हो गया उसकी ज़िन्दगी भरमें शायद यही एक ऐसा मौक़ा था कि दिलपर से उसका क़ाबू जाता रहा और वह बेइख़्तयार बेटे से लिपट कर ख़ुशी के आँसू बहाने लगा।

सवालात

१. रास्ते में जहाज़ को किस कठिनाई से दो चार होना पड़ा ?

२. कप्तान ने अपना फ़र्ज़ किस तरह पूरा किया उस को अपने लफ़्ज़ों में बयान करो।

३. कप्तान के बेटे रेनाल्ड ने अपने फ़र्ज़ को कैसे पूरा किया ?

४. इस सबक़ से क्या नसीहत मिलती है बयान करो।

२९ ग़ज़लें

१

न सुनो गर बुरा कहे कोई । न कहो गर बुरा करे कोई ॥
रोक लो गर ग़लत चले कोई । बख़्श दो गर ख़ता करे कोई ॥
कौन है जो नहीं है हाजत मन्द । किसकी हाजत रवा करे कोई ॥
बक रहा हूँ जुनून में क्या क्या । कुछ न समझे ख़ुदा करे कोई ॥

जब तवक़्क़ो ही उठ गई ग़ालिब ।
क्यों किसी का गिला करे कोई ॥

सवालात

१. माने लिखो:— जुनून, ख़ता, हाजतमन्द, तवक़्क़ो, गिला, ।
२. चौथे और आख़री शेर का मतलब समझाओ ।

(२)

बढ़ाओ न आपस में मिल्लत ज़्यादा।
मुबादा कि हो जाय नफ़रत ज़्यादा॥
करो दोस्तो पहले आप अपनी इज़्ज़त।
जो चाहो करें लोग इज़्जत ज़्यादा॥
फ़राग़त से दुनिया में दम भर न बैठो।
अगर चाहते हो फ़राग़त ज़्यादा॥
जहाँ राम होता है मीठी ज़बाँ से।
नहीं लगती कुछ इसमें दौलत ज़्यादा॥
फ़रिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना॥
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज़्यादा॥

सवालात

१. इनके माने लिखो और जुमलों में इस्तेमाल करो।

रामहोना, मिल्लत, फ़राग़त, मुबादा,।

२. इनका मतलब बताओः—

जहाँ राम होता है मीठी ज़बाँ से।
नहीं लगती कुछ इस में दौलत ज़्यादा॥
फ़रिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें पडती है मेहनत ज़्यादा॥

३० पेशों की तालीम

तालीम का मक़सद यह है कि हमारी जिस्मानी, दिमाग़ी और अख़लाक़ी .कुव्वतों की ऐसी तबियत और तरक़्क़ी हो कि आगे चल कर हम अपने देश और क़ौम के कुछ काम आ सकें।

यूरोप और अमेरिका के .खुशहाल होने की वजह यही नहीं है कि वहाँ पढ़े लिखे और आला तालीम पाए हुए मनुष्यों की बहुतायत है बल्कि इसका एक बड़ा कारण यह है कि वहाँ विद्यार्थी अपने आगामी जीवन के लिए तैयारी करते हैं और वालिदैन पहले ही से अपने बालकों की तबियत का लगाव मालूम करने की ओर उसके अनुसार उनको शिक्षा दिलाने की कोशिश करते हैं। आला तालीम केवल वही लड़के हासिल करते हैं जिनमें ऐसी आला तालीम हासिल करने की योग्यता भी होती है।

हिन्दुस्तान में आम तौर पर और हैदराबाद में ख़ास कर बहुत कम ऐसे तालिबे इल्म हैं जो यह तै करके तालीम पाते हों कि वह अपनी आइन्दा ज़िन्दगी में क्या काम करेंगे। अक्सर लड़कों के ज़हन में केवल यही बसा होता है कि किसी तरह किसी इम्तिहान में कामयाब हो जाएँ। चूँ कि वह ऐसी तालीम हासिल करते हैं कि सरकारी नौकरी के सिवा और कोई काम नहीं कर सकते इस लिए तालीम ख़त्म होते ही सरकारी कचहरियों में नौकरी के लिए उनके निवेदन पत्रों की बौछार शुरू हो जाती है। मुश्किल तो यह है कि हमारे यहाँ के

तालिबे इल्म सरकारी नौकरी के लिए भी तैयारी नहीं करते और पहले से यह सोच नहीं लेते कि वह कौन से सरकारी विभाग में खप सकते हैं। इसके सिवा सरकारी नौकरी का दायरा बहुत तंग है और हर एक महकमे में यह हालत है कि जगहें कम और उम्मीदवार ज़्यादा हैं बल्कि अब तो मुश्किल यह हो गई है कि बी. ए. एम. ए. कामयाब को पचास रुपये की जगह भी आसानी से नहीं मिलती।

तालीम पर सालाना एक बहुत बड़ी रक़म ख़र्च होने पर भी देश की निर्धनता में कुछ भी कमी दिखाई नहीं देरही है। इसकी वजह यह है कि सिर्फ़ नज़री और अदबी तालीम मुल्क की तरक़्क़ी के लिए काफ़ी नहीं है। इसके साथ पेशों की तरफ़ भी तवज्जह करना बहुत ज़रूरी है। अब वह समय आगया है कि चाकरी के सिवा दूसरे और ढँगों से रोज़ी पैदाकरने की फ़िक्र की जाय। अफ़सोस कि हमारे मुल्क में दूसरे पेशों को, जिनसे मुल्क की दौलत बढ़ती है आम तौर पर अच्छी नज़र से नहीं देखा जाता और यह समझा जाता है कि आदर है तो बस सरकारी नौकरी में है। यहाँ तक कि .खुद पेशेवाले लोगों के बच्चे थोड़ी बहुत तालीम पाने के बाद किसी पेशे को इख़्तयार करना अपने लिए बुरा समझते हैं। नतीजा यह है कि तालीम से रोज़ी के ज़रिये और ज़्यादा तंग होते जारहे है।

हिन्दुस्तान में एक बड़ी ख़राबी यह है कि जिस्मानी काम करने वाले तालीम की जरूरत का ख़्याल नहीं करते और दिमागी

काम करने वालों को जिस्मानी काम से घृणा है। किसी शख़्स की यह कहावत बहुत सच है कि "हिन्दुस्तान में तालीम और सनअत-व हिरफ़त के बीच में एक बड़ी चौड़ी खाड़ी है" जिस्मानी मेहनत करने वाले अनपढ़ हैं और तालीम पाए हुए लोग जिस्मानी मेहनत नहीं कर सकते। वजह यह है कि एक तरफ़ पढ़े लिखे लोग पेशों को गिरा हुआ समझते हैं और दूसरी तरफ़ जिस्मानी काम करनेवाले आम तौर पर यह ख़याल करते हैं कि पेशे के लिए जिस महारत की ज़रूरत है वह ख़ान्दानी होती है और जो कुछ बाप दादा से चला आया है वही काफ़ी है फिर तालीम की क्या ज़रूरत है? यह ख़याल ग़लत है, इस लिए कि बाप सिर्फ़ उतना ही सिखा सकता है जितना कि वह .ख़ुद जानता है। महारत को बढ़ाने का इस से कोई अवसर नहीं मिलता। दूसरे, ज़माना एक अवस्था में नहीं रहता। ज़रूरतों में तब्दीली होती रहती है। लोग नई नई चीज़ों को पसन्द करते हैं। पुराने ढंग की चीज़ें बेकार होती जाती हैं। नई नई कच्ची पैदावारें दरयाफ़्त होती रहती हैं। और औज़ारों से वक़्त, मेहनत और ख़र्च में कमी होती जाती है हिन्दुस्तान के कारीगर आम तौर पर तब्दीलियों से बे ख़बर होते हैं। जिसका नतीजा यह है कि वही चीज़ें बनती हैं जो पहले बनती थीं और वह उसी तरह तैयार होती हैं जैसी कि पहले तैयार होती थी। यही वजह है कि हिन्दुस्तान का रेशम पहले चीन के हाथ के बनाये हुए रेशम और बाद में यूरोप, अमेरिका और जापान के मशीन से बनाये हुए रेशम

का मुकाबला न कर सका। खेती बाड़ी में भी ज़माने के साथ साथ तब्दीलियाँ होती जाती हैं। अब नई नई चीज़ें बोई जाने लगी हैं और पैदावार ज़्यादा करने के लिए नये नये औज़ारों से काम लिया जाता है। काश्तकारी हो या सनअत व हिर्फ़त या व्योपार, ज़रूरत इस बात की है कि लड़के अपने माँ बाप से भी काम सीखें और तालीम के ज़रिये नए तरीक़ों और चीज़ों को भी मालूम करें जिस से जिन चीज़ों की ज़रूरत है उनको वह उसी ख़ूबी से तैयार कर सकें जैसा कि उनके बाप दादा पुरानी चीज़ों को तैयार करते थे। तालीम के कारण उन लड़कों में साहस और सुन्दर रचना, धर्म आचार, परिश्रम और किफ़ायत शआरी के गुण पैदा होंगे और उनकी आमदनी में भी ज़्यादती होगी।

सनअती तालीम पर ज़ोर देने से हमारा यह मतलब नहीं है कि हिन्दुस्तान को पूरे यूरुपी सनअती मुल्कों जैसा बना दिया जाए। हिन्दुस्तान की परिस्थिति पर विचार ज़रूरी है। यहाँ अस्सी फ़ी सदी लोगों का पेशा खेती बाड़ी है। इस लिए यहाँ खेती बाड़ी की तरक्क़ी की ज़रूरत है।

अगर्चे खेती की तालीम सनअत व हिर्फ़त की तालीम से कम ज़रूरी नहीं है लेकिन हिन्दुस्तान के हालात के अनुसार यह बहुत ज़रूरी है कि खेती बाड़ी करने वाले किसी न किसी सनअत की तरफ़ भी तवजह करें। खेती के लिए बारिश बहुत ज़रूरी है जिस पर इन्सान का बस नहीं। जब ज़रूरत के अनुसार बारिश नहीं होती है

तो खेती बाड़ी करने वालों को बहुत नुक़सान उठाना पड़ता है। और भूखों मरने की नौबत आ जाती है। किसानों को काफ़ी .फ़ुर्सत मिलती है और अगर वह अपनी .फ़ुर्सत के घण्टों में घर पर कोई सनअती काम किया करें तो फिर दुष्काल के समय उनको भूखे रहने का कोई भय नहीं हो सकता क्यों कि बारिश न होने की सूरत में वे अपनी सनअत से रोज़ी पैदा कर सकते हैं और अगर बारिश हो तो खेती बाड़ी से जब कभी .फ़ुर्सत मिले वह सनअती काम में मश.गूल होकर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

दूर की सोचने वाले यह कहने लगे हैं कि निरी अदबी तालीम से हर इन्सान न अपनी रोज़ी कमा सकता है और न देश की निर्धनता को दूर कर सकता है इस लिए हर देश प्रेमी का कर्तव्य है कि वह पेशों की तालीम का हर एक के दिल में आदर पैदा करने की कोशिश करे और आला और अदबी तालीम सिर्फ़ ऐसी हालत में हासिल करने की राय दे जब कि तालिबइल्म आला दिमाग़ी तालीम पाने का माद्दा और योग्यता रखता हो।

यूरोप और अमेरिका में पेशों की तालीम का वही आदर और मान है जो अदबी तालीम का है॥

सवालात

१. माने बताओ और जुमलों में इस्तेमाल करो।

मक़सद, भाँति, कहावत, अवस्था, साहस, सुन्दर रचना,

२. यूरोप और अमेरिका की मालदारी की .खास वजह क्या है?

३. हिन्दुस्तान में खेती बाड़ी की तालीम और साथ ही साथ किसानों को किसी एक सनअत का सिखाना क्यों ज़रूरी है ?

४. पेशों की तालीम की क्या ज़रूरत है ?

३१ ग़ज़लें

(१)

होती है यारो कहने से अपनी पराई बात।
पर हमसे तो थमी न कभी मुँह पे आई बात॥
अब तो हुए हैं हम भी तेरे ढबसे आशना।
वाँ तूने कुछ कहा कि इधर हमने पाई बात॥
अब मुझ ज़ईफ़ो ज़ार को मत कुछ कहा करो।
जाती नहीं है मुझसे किसी की उठाई बात॥
बुलबुल के बोलने में सब अन्दाज़ हैं मेरे।
पोशीदा कब रहे हैं किसी की उड़ाई बात॥
ख़त लिखते लिखते मीर ने दफ़्तर किए रवाँ।
इफ़राते इश्तियाक़ ने आख़िर बढ़ाई बात॥

सवालात

१. इनके माने बताओ:—ढब, आशना, ज़ार, बात बढ़ाना, इश्तियाक़।

२. मतलब बताओ:—

अबतो हुए हैं हम भी तेरे ढब से आशना।
वाँ तूने कुछ कहा कि इधर हमने पाई बात॥
बुलबुल के बोलने में सब अन्दाज़ हैं मेरे।
पोशीदा कब रहे है किसी की उड़ाई बात॥

२

गदा दस्ते अहले करम देखते हैं।
हम अपना ही दम और क़दम देखते हैं ॥
ग़रज़ कुफ़्र से कुछ न दीं से है मतलब।
तमाशाये दैरो हरम देखते हैं ॥
ख़ुदा दुश्मनों को न वह कुछ दिखाए।
जो कुछ दोस्त से अपने हम देखते हैं।
मगर तुझसे रन्जीदा ख़ातिर है सौदा।
उसे तेरे कूचे में कम देखते हैं ॥

सवालात

१. माने बताओ:—अहले करम, दैरो हरम, रंजीदा ख़ातिर, कूचा, ।

२. दूसरे और तीसरे शेर का मतलब समझाओ ।

३२. सरोजनी नायडू

सरोजनी नायडू डाक्टर अघोर नाथ की पुत्री हैं। यह बंगाल के रहने वाले थे। लेकिन नौकरी के कारण हैदराबाद में रहने लगे थे। सरोजनी देवी हैदराबाद ही में सन १८७९ ई. में पैदा हुईं।

डाक्टर अघोर नाथ निज़ाम कॉलेज के सदर थे। हैदराबाद में रहने सहने की वजह से उनके घर में हिन्दुस्तानी बोली जाने लगी थी इसलिए सरोजनी देवी को बचपन ही में हिन्दुस्तानी बोलनी आगई। सोलह वर्ष की उम्र में यह दाख़ले के इम्तिहान में कामयाब हो गईं और सरकारी वज़ीफ़े से तालीम हासिल करने इँग्लिस्तान गईं। इनकी अँग्रेज़ी नज़्मों का मजमूआ सुनहरी चौखट (गोल्डन थ्रेश होल्ड) इँग्लिस्तान ही में छपा जो ज़बान और ख़्यालात के अनोखे पन की वजह से बहुत पसंद किया गया।

सरोजनी देवी सन १८९५ ई. में इँग्लिस्तान गईं थीं लेकिन वहाँ की आबो हवा मुआफ़िक़ न हुई और यह बीमार हो गईं। इसलिए सन १८९८ ई० में हिन्दुस्तान वापस चली आईं। यहाँ आने पर इनकी शादी डाक्टर गोविन्द राजलू नायडू से हो गई और उसके बाद इन्होंने अपनी ज़िन्दगी क़ौम की सेवा के लिए अर्पण

श्रीमती सरोजनी नायडू

करदीं। जब सन १९०९ ई० में मूसा नदी में बाढ़ आई और हज़ारों आदमी बह गए, घर डूब कर खंडहर हो गए, इन्होंने मुसीबत के मारों के साथ बड़ी हमदर्दी की और उनको हर तरह से सहायता पहुँचाई। इनकी इस सेवा को अँग्रेज़ी हुकूमत ने भी कैसरे हिन्द का सुनहरा तमग़ा दे कर सराहा।

सरोजनी नायडू काँग्रेस के कामों में अनथक कोशिश किए जाती थीं और यह उनकी सच्ची सेवा का ही फल था कि वह हिन्दुस्तान की पहली स्त्री हैं जो काङ्ग्रेस की सभा पति चुनी गईं। कई बार सियासी कामों के कारण जेल खाने की भी सैर की। यह स्वदेशी तहरीक की दिल से तरफ़दार थीं। इनका घर बहुत साफ़ सुथरा, बाग़ बग़ीचा फूलों से भरा, कमरे सजे हुए एक दरबार सा लगा रहता था। अदीब, शायर, सियासत दाँ, सनअत पसन्द, सब ही तरह के कमाल वाले इनके पास मिलने जुलने आते थे।

सरोजनी नायडू का अंग्रेज़ी का लबो लहजा ऐसा अच्छा होता था और इसमें उनके बोलने से ऐसी मिठास आजाती थी कि अंगरेज़ भी अश अश करते थे। हज़ारों लाखों के समूह में जब तक़रीर करने खड़ी हो जाती थीं तो ऐसा सन्नाटा छा जाता था कि साँसों की आवाज़ सुनने का भी होश नहीं रहता था। इन्होंने हिन्दू मुसलमानों को मिला देने का बीड़ा उठाया था और रात दिन हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता और हिन्दू मुसलमानों के दिलों मिलाप की

फ़िक्र में लगी रहती थीं और इनके मुलाक़ात के कमरे में इत्तिहाद का ऐसा मन्ज़र नज़र आता था जिसको हिन्दुस्तान में आम देखने के लिए आँखें तरसती हैं।

अगर कभी मुल्क में कहीं काल पड़ जाता था तो सरोजनी नायडू वहाँ का दौरा करती थीं और कंगालों और क़हत के मारों की सहायता करती थीं। चन्दे जमा करती थीं, जलसे करती थीं, और हर तरह उनका मुसीबत में हाथ बँटाती थीं, सेवा करने का ख़्याल उनमें इतना बढ़ गया था कि उनको अपनी तनदुरुस्ती और जीवन का तक ख़्याल नहीं रहता था।

सरोजनी नायडू को क़ौमी सेवा में ज़रा आराम लेने का ख़्याल नहीं आता था। वह देशकी ख़िदमत में थकना तो जानती ही नहीं थीं दिमाग़ की थकन को अपनी मीठी नज़्मों से उतारती थीं। चुनाँ चे उनकी अँग्रेज़ी नज़्मों के तीन मजमूए छप चुके हैं। वह उन नज़्मों और अपनी .ख़ुश गोई के कारण "बुलबुले हिन्द" कहलाती थीं।

उनकी दो बेटियाँ और दो बेटे, जिनमें से एक का देहान्त हो गया सब के सब क़ाबिल और देशके सेवक हैं। सरोजनी देवी का ज़्यादा वक़्त क़ौम की सेवा के कारण नगर नगर के दौरों में सर्फ़ होता था। उन्हों ने अपना माल, अपनी दौलत, अपना आराम, सब क़ौम

पर से निछावर कर दिया था। इसलिए हिन्दुस्तान के बाशिन्दों पर उनका बड़ा एहसान है। हर भले मानस को अपने मुल्क और अपनी क़ौम के नेताओं की इज़्ज़त करनी चाहिये। जिस क़ौम के नौजवानों के दिलमें उनकी मुहब्बत और आदर नहीं वह क़ौम तबाह हो जाने वाली है।

जब भारत को स्वराज्य मिला तो इस आज़ादी की देवी को यू. पी. की गवर्नरी दी गई। उनकी गवर्नरी का ज़माना जमहूरी राज्य का अच्छा नमूना था। मगर अफ़सोस है कि भारत माता की मशहूर और क़ाबिल बेटी पहली मार्च सन १९४८ ई. को वैकुण्ठ वासी हो गईं। उनकी चिता की राख स्पेशल ट्रेन के ज़रिए हैदराबाद लाई गई। स्टेशन पर उनके अज़ीज़ों और दोस्तों के अलावा हैदराबाद के फ़ौजी गवर्नर ने सरकारी तौर पर उसका स्वागत किया और यहाँ से यह राख लाकर आम दर्शन के लिए उनके मकान गोल्डन थ्रेश होल्ड में रक्खी गई; और दूसरे दिन जुलूस के साथ सङ्गम पहुँचाई गई जहाँ मज़हबी रस्में अदा करने के बाद पानी में बहा दी गई॥

सवालात

१. सरोजनी नायडू की तालीमी तरक़्क़ी का हाल बयान करो।

२. इँगिलस्तान में सरोजनी नायडू की शोहरत किस वजह से हुई ?

३. सरोजनी नायडू को क़ैसरे हिन्द का सोने का तमग़ा क्यों दिया गया ?

४. इनके माने बताओ और जुमलों में इस्तेमाल करो।
अनोखा पन, सेवा, सराहना, सभापति. समूह: स्वतन्त्रता, नगर, नेता।